ISSN 2349-6614

नवम्बर 2020

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

शुभम् करोति
कल्याणमारोग्यं धनसंपदा ।
शत्रुबुद्धि विनाशाय
दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ।।

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 7 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

टाया एस्टेट्स

अमृत वाटिका - राज वाटिका - श्याम वाटिका

टाया एस्टेट्स, सहेलियों की बाड़ी, उदयपुर

Amrit Vatika - Taya Estates

टाया रिसोर्ट्स

सजनी वाटिका-साहेब वाटिका-हजारी बाग

सुभाष नगर, उदयपुर

बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :

सुखसागर पैलेस, 133, अशोक नगर, मेन रोड, उदयपुर, मो. : 9001997000, 9001998888

पाठकों, लेखकों एवं विज्ञापनप्रदाता एजेन्सियों को प्रकाश-पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

नवम्बर
2020
वर्ष 18, अंक 8

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कमावत, जितेन्द्र कमावत,
ललित कमावत

बीक रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

09 नया विवाद

कृष्णलला भी पहुंचे कोर्ट के द्वार

22 लोक पर्व

आस्था, पवित्रता और साधना का संगम छठ पूजा

26 दीपोत्सव

सुख, सम्मान और समृद्धि की कामना का महापर्व

32 सबक

शाहीन बाग जैसे प्रदर्शन गलत

35 अनुतरित

सबूतों के अभाव में बरी हुए आरोपी

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनियर प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

Yarn

Fabric

Garments

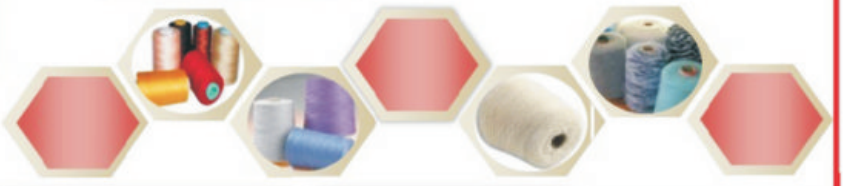

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327 001 (RAJ)
Ph.+91-2962-27676,79-81,257195-97
Fax.+91-2962-240692
Email:info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI -4000 02
Phoe:+91-22-66356571-76
Email:info@banswarasyntex.cim

Visit us at :www.banswarasyntex.com

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman (U.T.)
Phone::+91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.5-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT-394230 (GUJARAT)
Phone.:+91-261-2390363
Email:info@banswarasyntex.com

अन्नदाता को खतरे में न डालिए

केन्द्र सरकार ने कृषि सुधारों पर अपने तर्क के साथ संसद से दो विधेयक पारित करवाए हैं। कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य(संवर्द्धन व सरलीकरण) विधेयक के अन्तर्गत किसान अपनी उपज कहीं भी बेच सकेंगे। कृषक(सशक्तीकरण और संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा करार विधेयक के तहत सरकार का दावा है कि किसानों की आय बढ़ेगी, बिचौलिए हाशिए पर होंगे और आपूर्ति शृंखला तैयार होगी। इससे पहले 'आवश्यक वस्तु(संशोधन) विधेयक' पारित किया गया, जिसमें प्रावधान है कि अनाज, दलहन, खाद्य तेल, आलू, प्याज अनिवार्य वस्तु नहीं रहेंगे। इनका भण्डारण किया जा सकेगा। इसके पीछे सरकार का जो तर्क है, उसकी आलोचना होना स्वाभाविक है। सरकार कह रही है कि इससे कृषि क्षेत्र में विदेशी निवेश आकर्षित होगा। उक्त विधेयकों के खिलाफ देश के कुछ भागों विशेषकर पंजाब, हरियाणा, तेलंगाना, राजस्थान आदि राज्यों में किसान आन्दोलित हैं। उनका तर्क है कि ये विधेयक मंडियों का अस्तित्व खत्म करने वाले हैं। जब मंडियां ही नहीं रहेंगी तो किसानों को एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिलेगा, जबकि समूचे देश में समान एमएसपी होना चाहिए। इसी तरह, कीमतें तय करने की भी कोई प्रणाली नहीं है। इससे निजी कम्पनियों को निवेश की आड़ में किसानों के शोषण का जरिया मिल जाएगा और किसान अपने ही खेत में मजदूर बनकर रहने को मजबूर होगा। कारोबारी जमाखोरी करेंगे और खाद्य कीमतों में अस्थिरता आएगी। इससे खाद्य सुरक्षा समाप्त हो जाएगी और आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी से आम आदमी का पारिवारिक जीवन संकट में पड़ जाएगा।

विधेयकों के विरोध में एनडीए सरकार का घटक शिरोमणि अकाली दल उससे अलग हो गया है। मंत्रिमंडल में शामिल उसकी प्रतिनिधि खाद्य प्रसंस्करण मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया जो हो मंजूर भी गया। देश के अन्नदाता का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि देश की आजादी के 70 साल बाद आज भी वह भूखा, नंगा और सरकारों की दया का पात्र है। वह आज भी सुरक्षित नहीं है। उसके पसीने से औद्योगिक घराने फल-फूल रहे हैं और अब सरकार उनकी लंगोटी भी छीनकर उन्हें दे देना चाहती है। यदि किसान इन विधेयकों के पारित होने के साथ ही अपने लिए अतिरिक्त सुरक्षा चाहते हैं, तो इसमें आपत्ति क्या है? भारत अभी कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग के लिए तैयार नहीं है। हमारे यहां 80 फीसदी लघु कृषक हैं, वे कैसे समृद्ध निजी औद्योगिक घरानों से मोल-भाव कर पाएंगे? कैसे वे उनसे अपनी उपज की कीमत के लिए दबाव बना पाएंगे? अच्छा तो यह होता कि सरकार पहले अपनी इस योजना को बतौर प्रयोग किसी एक राज्य से पायलट प्रोजेक्ट रूप में शुरू करती।

सरकार की ओर से इन विधेयकों की पैरोकारी करते हुए कहा गया है कि जो किसानों से कमाई का एक बड़ा हिस्सा खुद ले लेते हैं, उनसे किसानों को बचाने के लिए इन विधेयकों को लाना बहुत जरूरी था। ये तीनों विधेयक किसानों के लिए मजबूत रक्षा कवच बनने वाले हैं।

विधेयकों ने कानून का रूप ले लिया है और वैध रूप से मंडी के बाहर भी अनाज बिक रहा है, जिससे एक देश, दो बाजार वाली स्थिति सामने है। मंडी में जो खरीद होगी, उस पर टैक्स लगेगा, लेकिन मंडी के बाहर होने वाली खरीद टैक्स मुक्त होगी। इस वजह से मंडियां धीरे-धीरे खाली होकर अपने अस्तित्व को ही समाप्त करेंगी। इस मामले में सरकार का कहना है कि मंडियों को कुछ नहीं होगा। हमने एपीएमसी को नहीं छुआ है और न्यूनतम समर्थन मूल्य भी जारी रहेगा, पर किसानों को शंका है कि जब एपीएमसी का महत्व कम होगा, तो न्यूनतम समर्थन मूल्य का महत्व भी स्वत: विलोपित हो जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस सम्बंध में किसानों को आश्वस्त किया है कि 'ये विधेयक सही मायने में किसानों को बिचौलियों और तमाम अवरोधों से मुक्त करेंगे। इन कृषि सुधारों से किसानो को अपनी उपज बेचने के लिए नए-नए अवसर मिलेंगे, जिससे उनका मुनाफा बढ़ेगा। इससे हमारे कृषि क्षेत्र को जहां आधुनिक टेक्नोलॉजी का लाभ मिलेगा, वहीं अन्नदाता सशक्त होंगे।' प्रधानमंत्री के इस आश्वासन से किसानों को राहत का अहसास जरूर होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विश्व के कृषि बाजार में जो व्यवस्थाएं हैं, उन्हें कमोबेश हमारे यहां भी लागू करने की पुरानी मांग है। लेकिन कोई भी परिवर्तन हमारे यहां की कृषि और किसान को ध्यान में रखते हुए ही किया जा सकता है। किसानों के हित के साथ-साथ राज्य सरकारों को मंडी से मिलने वाले राजस्व को भी बहाल रखना चाहिए। इस मामले में राजनीति की बजाय राष्ट्र और किसानों के हित को तरजीह दी जाए। जो नेता खुद को किसानों का पक्षधर बता रहे हैं, उन्हें आगे आकर किसानों व राष्ट्र के हितों को सुनिश्चित करने वाली सलाह देनी चाहिए। डण्डे और झण्डों की राजनीति बहुत हो चुकी अब सीधे-सीधे मुद्दे पर आइये और सलीके से अपनी बात को रखिए। समझने और समझाने वाले मोड में बात होगी तो बनेगी भी। कृषि क्षेत्र में खुला बाजार और कम्पनियां हमारे देश में कोई नहीं बात नहीं है, जरूरत इस बात की है कि राष्ट्र के विकास में किसानों के योगदान को देखते हुए इनके हितों की रक्षा करना सरकार की पहली जिम्मेदारी है। इन विधेयकों से किसान और कृषि की सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

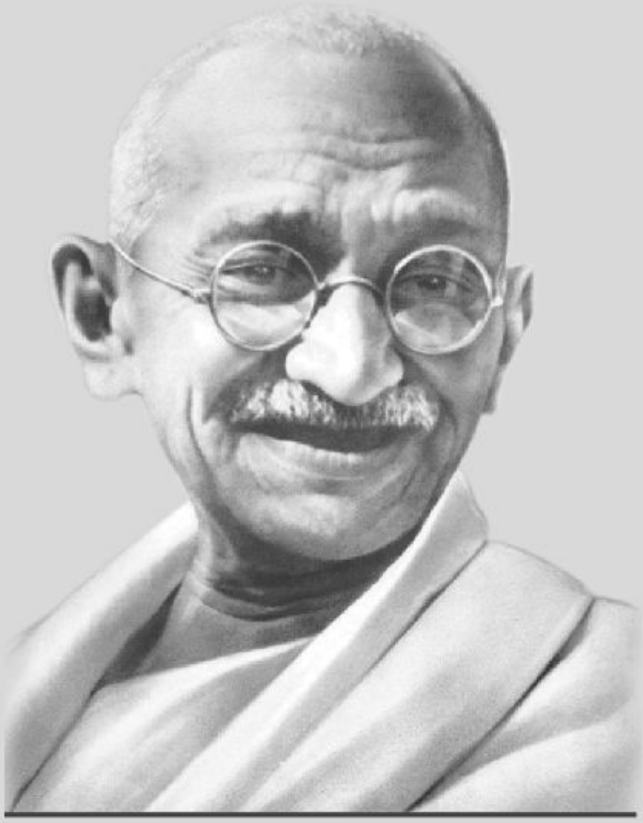

गाँधी जयन्ती
2 अक्टूबर, 2020

"मेरा धर्म सत्य और
अहिंसा पर आधारित है,
सत्य मेरा भगवान है
और अहिंसा उसे पाने
का साधन"

– महात्मा गाँधी

सत्य एवं अहिंसा के पुजारी
युगदृष्टा
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
को जन्मदिवस पर

शत् – शत् नमन

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

राजस्थान संवाद

कोरोना से बचाव के लिए 'नो मास्क–नो एन्ट्री' को जन आंदोलन बनाएं

कोरोना संबंधी समस्या समाधान के लिए डायल करें 181

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

खामियां दूर आक्रामक हुई सेना

कारगिल संघर्ष सिर्फ एक लड़ाई नहीं थी, उससे भारत ने बहुत कुछ सीखा भी। खुफिया तंत्र की नाकामी सबसे बड़ी सीख थी। लेकिन इन 21 वर्षों में देश ने इन खामियों से सीख लेकर अपनी ताकत कई गुना बढ़ाई है। आज हमारे पास सटीक निशाने वाले हथियार हैं और खुफिया तंत्र भी पूर्वापेक्षा मज़बूत हुआ है।

✍ राजकमल जैन

26 जुलाई, 1919 कारगिल युद्ध की समाप्ति के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयीने कमियां तलाशने के लिए के. सुब्रह्मण्यम् की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की थी। इसमें लेफ्टिनेन्ट जनरल(रिटा.) के के हजारी, बीजी वर्गीज और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में सचिव सतीश चंद्र शामिल थे। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में चार प्रमुख बातें कहीं। पाकिस्तान के साथ हुए इस युद्ध में भारत के 527 जवान और सैन्य अफसर शहीद हुए थे।

समिति ने रिपोर्ट में बताया : देश की सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली में गंभीर कमियों के कारण कारगिल संकट पैदा हुआ, समिति ने खुफिया तंत्र, संसाधनों और समन्वय की कमी को बड़ी वजह बताया, पाकिस्तान सेना की गतिविधियों का पता लगाने में विफल रहने को भी वजह माना और चौथी बात युवा और फिट सेना को आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया।

ताकत : तकनीक आधारित युद्ध प्रणाली की तरफ बढ़े

सेना में कई बड़े बदलाव हुए। हम तकनीक आधारित युद्ध प्रणाली की तरफ बढ़े हैं। कारगिल के वक्त जिन राइफल से हमारे जवान दुश्मन पर वार कर रहे थे, वह उतनी सटीक और कामयाब नहीं थीं। लेकिन, आज जवानों के पास अत्याधुनिक हथियार हैं। लेजर बम से लेकर सटीक निशाने वाले हथियार हमारे पास आ गए हैं। वायुसेना को भी काफी ताकत मिली है। सीमावर्ती क्षेत्रों में एयर स्ट्रिप और हेलीपैड बनाए गए हैं, जहां हम पूरी फोर्स को कुछ ही घंटों में ही उतार सकते हैं। सीमा पर सड़कों का अच्छा खासा जाल बिछाया गया है। हम सीमा के काफी करीब पहुंच गए हैं। जहां बेकअप के लिए हर वक्त फोर्स तैनात रहती है।

चुनौती : खुफिया तंत्र की और मजबूती

पाकिस्तान और चीन का नजरिया बदलने वाला नहीं है। भारत को परेशान करने के लिए ये देश हरकत करते रहेंगे। कारगिल में गश्त नहीं थी तो घुसपैठ हुई। उसके बाद से लगातार गश्त है। इधर, गलवान में भी गश्त शुरू हो जानी चाहिए थी, लेकिन कोरोना के चलते हमारी फोर्स आगे गई नहीं और फिर जो हुआ सबके सामने हैं। ऐसे मामलों में लोकल इंटेलीजेंस भी शामिल हैं और अन्य माध्यमों से मिलने वाली सूचनाएं भी। क्योंकि कारगिल और गलवान की रणनीति बॉर्डर पर बैठकर नहीं हुई है। यह रावलपिण्डी, इस्लामाबाद और बीजिंग में तैयार की गई होगी। ऐसे में उस स्तर से सूचनाएं नहीं मिली हैं।

हाइपरसोनिक तकनीक भी हासिल

स्वदेशी हाइपरसोनिक तकनीक में अमरीका, रूस और चीन के बाद अब भारत चौथा देश बन गया है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 7 अगस्त को ओडिशा के बालासर में हाइपरसोनिक टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर वीकल (एचएसटीडीवी) का सफल प्ररीक्षण किया। इसमें स्वदेशी स्क्रैमजेट प्रपल्शन सिस्टम का इस्तेमाल किया गया है। इससे पहले जून 2019 में इसका पहला परीक्षण हुआ था।

क्या होगा फायदा : ▲ हवा में आवाज की गति से छह गुना ज्यादा तेज रफ्तार। ▲ इससे हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइलों के विकास का रास्ता साफ हुआ है। ▲ सैटेलाइट लॉन्चिंग का खर्च बहुत किफायती हो जाएगा।

तब क्या थे हालात

- कारगिल युद्ध के वक्त लद्दाख में जोजीला से लेह तक 300 किलोमीटर नियंत्रण रेखा की सुरक्षा के लिए महज एक ब्रिगेड थी।
- दुश्मन 16 हजार से 18 हजार फीट की ऊंचाई पर था और हम छह से सात हजार फीट नीचे। उन पर हमला करना इतना आसान नहीं था।
- वायु सेना को 18 हजार फीट की ऊंचाई पर बमबारी करने का अभ्यास नहीं था। तब 12 हजार फीट की ऊंचाई से ही बमबारी की गई।
- राडार सिस्टम तब कमजोर था अगर वायुसेना विमानों को ऊपर ले जाती तो सिग्नल कमजोर हो जाता, बम कहां गिराना है पता नहीं चल पाता।
- उस समय जानकारी नहीं थी कि पाकिस्तानी घुसपैठियों की संख्या कितनी हैं, वे कहां-कहां छिपकर बैठे हैं और कैसे हथियारों से लैस हैं। निगरानी तंत्र की कमी थी।
- शुरुआत में मिग-23, मिग 21 का इस्तेमाल किया गया, लेकिन बाद में मिग-25, मिग-27 एवं मिग-29 तक का इस्तेमाल किया गया। आखिर में मिराज के इस्तेमाल से रुख ही बदल गया।

अब बदले हालात

- अब लद्दाख में सेना की चौदह कोर की तीन डिवीजन तैनात हैं।
- सेना अत्याधुनिक हथियारों से लैस हुई है और मिसाइलों, हेलीकॉप्टर्स की संख्या बढ़ी है। वायुसेना अब चंद मिनटों में पूरा युद्धक साजो-सामान लद्दाख पहुंचाने में सक्षम है।
- आज दुश्मन की हर हरकत पर नजर रखने के लिए बेहतर राडार, यूएवी (मानव रहित विमान) और आधुनिक निगरानी यंत्र हैं।
- आज हमारी सेना में पहले की तुलना में ज्यादा कमांडिंग यूनिट जवान (30 वर्ष) अधिकारी हैं।
- डिफेंस इंटेलिजेंस एजेंसी और राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन बनाया गया जो तकनीक के मामले में सेना को और अत्याधुनिक बनाने पर काम कर रहा है।
- तीनों सेनाओं के बीच समन्वय के लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की कमी महसूस की जा रही थी, उसे भी वर्तमान सरकार ने पूरा कर दिया।

इनसे है ताकत

राफेल

दुनिया के सबसे अत्याधुनिक लड़ाकू विमान राफेल की पहली खेप सेना को मिल गई है। जिसे अंबाला में तैनात किया गया है। यहां से चीन-पाकिस्तान दोनों की हरकतों पर नजर रखी जा सकेगी। यह विमान चीन के अति उन्नत फाइटर जेट चेंगदू-जे-20 पर बहुत भारी हैं।

होवित्जर तोपें

लद्दाख में आधुनिक एम777 होवित्जर तोपें तैनात की गई हैं। एक मिनट में पांच गोले दागने में सक्षम यह तोपें बोफोर्स तोप की जगह ले रहीं। हल्की होने के कारण इन्हें एक स्थान से दूसरी जगह ले जाना काफी आसान है और ऊंचे स्थानों पर बमबारी करने में यह काफी सक्षम है।

अपाचे हेलीकॉप्टर

सेना में शामिल अपाचे हेलीकॉप्टर रडार की पकड़ में नहीं आते और एक साथ 16 एंटी टैंक मिसाइल छोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसके राइफल में एक बार में 30 एमएम की 1,200 गोलियां भरी जा सकती हैं। इसलिए इसे दुनिया का सबसे खतरनाक लड़ाकू हेलीकॉप्टर भी कहा जाता है।

चिनूक हेलीकॉप्टर

दो रोटर इंजन से लैस चिनूक हेलीकॉप्टर किसी भी मौसम का सामना करने में सक्षम। इसके जरिए भारतीय सेना अपनी टुकड़ियों को दुर्गम और ऊंचे इलाकों में जल्दी पहुंचा पाएगी। सेना को हथियार आसानी से मुहैया करवाए जा सकते हैं। तेजी से उड़ान भरने और बेहद घनी पहाड़ियों में भी सफलतापूर्वक काम करने में सक्षम।

अवॉक्स रडार

एयरबोर्न वॉर्निंग एण्ड कंट्रोल सिस्टम यानी अवॉक्स भारतीय वायुसेना में शामिल एक ऐसी प्रणाली है जो आसमान में 400 किलोमीटर ऊपर क्रूज मिसाइलों और विमानों का पता लगा सकती है। ये सिस्टम किसी भी मौसम में आकाशीय खतरे को भांपने में सक्षम है।

मिसाइल डिफेंस सिस्टम

भारत रूस से एस-400 मिसाइल सिस्टम खरीदने का सौदा कर चुका है। यह दुनिया की सबसे उन्नत वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली है। यह एक साथ 36 मिसाइलों को मार गिराने में सक्षम है और लगभग 10,000 फीट(30 किमी) की ऊंचाई तक निशाना साध सकता है।

ब्रह्मोस

यह मिसाइल भारत की अब तक की सबसे आधुनिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली है। इसने भारत को मिसाइल तकनीकी में अग्रणी देश बना दिया है। ये मिसाइल जमीन, समुद्र और आकाश से समुद्र और जमीन पर हमला कर सकती है। इसकी मारक क्षमता 290 किमी और गति 208 मैक है।

ध्रुवास्त्र मिसाइल

एंटी टैंक 'ध्रुवास्त्र' मिसाइल भारत में ही विकसित तीसरी पीढ़ी की मिसाइल है। 'दागो और भूल जाओ' की नीति पर काम करती है और किसी भी टैंक को पलभर में उड़ाने में सक्षम है। अटैक हेलिकॉप्टर ध्रुव पर इसे तैनात किया जाएगा, ताकि वक्त आने पर दुश्मन को सबक सिखाया जा सके। इसके अलावा देश की सेना के पास पृथ्वी, अग्नि सहित कई अन्य मिसाइल भी हैं।

कृष्णलला भी पहुंचे कोर्ट के द्वार

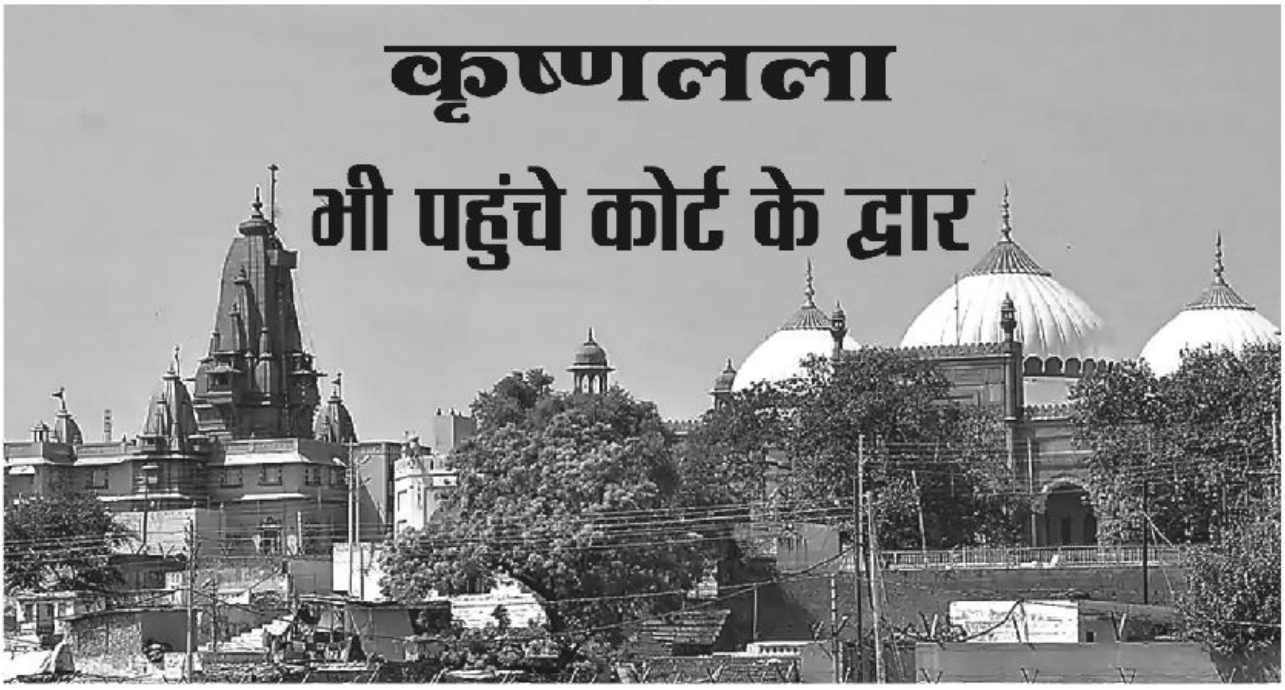

✍ अशोक तम्बोली

❖ एडीजे ने खारिज की भक्तों की याचिका जिला कोर्ट ने विचार के लिए स्वीकार की अपील

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि का विवाद सुलझने के बाद लगता है अब मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि-ईदगाह विवाद को गरमाने की कोशिशें शुरू हो गई है। इस सम्बंध में पिछले दिनों भगवान श्रीकृष्ण विराजमान के नाम से मथुरा के सिविल जज सीनियर डिवीजन की अदालत में एक याचिका दायर की गई, जिसे अदालत ने खारिज कर दिया। लेकिन 16 अक्टूबर को जिला जज ने याचिका को विचारार्थ स्वीकार कर लिया।

श्रीराम जन्मभूमि का विवाद निस्तारित हो जाने के बाद अब श्रीकृष्ण जन्मस्थान, मथुरा का मुद्दा गर्माने लगा है। मथुरा की सीनियर सिविल जज छाया शर्मा की अदालत में श्रीकृष्ण विराजमान सहित कई भक्तगणों को वादी बनाते हुए 25 सितम्बर को दावा पेश किया गया कि शाही ईदगाह मस्जिद को हटाते हुए 13.37 एकड़ जमीन पर वादियों को मालिकाना हक़ सौंपा जाए। याचिकाकर्ताओं का कहना था कि वर्तमान में जिस जगह आज श्रीकृष्ण जन्मस्थान है, वह पांच हजार साल पहले राजा कंस का कारागार था। शाही ईदगाह ट्रस्ट ने अपने समुदाय की मदद से श्रीकृष्ण से सम्बन्धित भूमि पर कब्जा कर लिया और वहां एक ढांचे का निर्माण कर दिया। 12 अक्टूबर 1968 में श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान और शाही ईदगाह मस्जिद के बीच जमीन को लेकर हुआ समझौता और 20 जुलाई, 1973 को हुई डिक्री गलत थी। इन्हें रद्द किया जाए। श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान को इस प्रकार का समझौता करने का अधिकार ही नहीं था। करीब 57 पृष्ठ के इस दावे को श्रीकृष्ण विराजमान स्थान श्रीकृष्ण जन्मभूमि, उनकी सखा लखनऊ निवासी रंजना अग्निहोत्री, त्रिपुरारी त्रिपाठी, दिल्ली निवासी प्रवेश कुमार, करूणेश शुक्ला व शिवानी सिंह तथा सिद्धार्थ नगर निवासी राजमणि त्रिपाठी की ओर से सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता हरिशंकर जैन व विष्णु शंकर जैन ने पेश किया।

कोर्ट ने की याचिका खारिज

उक्त वादियों की ओर से दायर याचिका 30 सितम्बर को एडीजे एफटीसी(द्वितीय) छाया शर्मा ने खारिज कर दी। उन्होंने इसके पीछे पर्याप्त आधार न होने की बात कही। याचिका में यूपी सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड, कमेटी ऑफ मैनेजमेन्ट ट्रस्ट, शाही ईदगाह मस्जिद, श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट व श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान को पार्टी बनाया गया था। मामले से सम्बद्ध आठों वादियों ने 12 अक्टूबर को जिला जज की अदालत में अपील पेश की जिसे 16 अक्टूबर को सुनवाई के लिए स्वीकार किया गया। इससे एक दिन पहले 15 अक्टूबर को अ. भा. अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्रगिरी और हनुमानगढ़ी के महंत धर्मदास, अयोध्या निर्वाणी अखाड़ा के महंत राजेन्द्र दास श्रीकृष्ण जन्म स्थान पहुंचे और मंदिर में दर्शन के बाद श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान के सचिव कपिल शर्मा और सदस्य गोपेश्वरनाथ चतुर्वेदी से मुलाकात की। अपील स्वीकार करते हुए जिला न्यायाधीश साधना रानी ठाकुर ने पक्षकारों को जवाब दाखिल करने के आदेश दिए हैं। अगली सुनवाई 18 नवम्बर को होगी।

1832 से हो रही मुकदमेबाजी

श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान और शाही मस्जिद ईदगाह के बीच पहला मुकदमा 1832 में शुरू हुआ था। तब से लेकर विभिन्न मसलों पर कई बार मुकदमेबाजी हुई लेकिन जीत हर बार सेवा संस्थान की हुई। इसके बाद तमाम मुकदमे हुए। 1897, 1921, 1923, 1929, 1932, 1935, 1955, 1964, 1966 में भी केस चले।

मुकदमे की रूकावट : इस मुकदमे में एक बड़ी रूकावट प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट 1991 है। इस एक्ट के मुताबिक आजादी के वक्त 15 अगस्त, 1947 को जो धार्मिक स्थल जिस संप्रदाय का था, उसी का रहेगा। इस एक्ट के तहत श्रीरामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को छूट दी गई थी।

यह था 1968 का समझौता

दायर याचिका के अनुसार मथुरा में शाही ईदगाह मस्जिद कृष्ण जन्मभूमि से सटी हुई है। इतिहासकार मानते हैं कि औरंगजेब ने प्राचीन केशवनाथ मंदिर को नष्ट कर दिया था और मस्जिद का निर्माण कराया था। 1935 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने वाराणसी के हिन्दू राजा को जमीन के कानूनी अधिकार सौंप दिए थे। जिस पर मस्जिद खड़ी थी। सन् 1951 में श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट बनाकर यह तय किया गया कि वहां दोबारा भव्य मंदिर का निर्माण होगा और ट्रस्ट उसका प्रबंधन करेगा। इसके बाद 1958 में श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान नाम की संस्था का गठन किया गया। कानूनी तौर पर इस संस्था को जमीन का मालिकाना हक हासिल नहीं था, लेकिन इसने ट्रस्ट के लिए तय सारी भूमिकाएं निभानी शुरू कर दीं।

इस संस्थान ने 1964 में पूरी जमीन पर नियंत्रण के लिए एक सिविल केस दायर किया, लेकिन 1968 में खुद ही मुस्लिम पक्ष के साथ समझौता कर लिया। इसके तहत मुस्लिम पक्ष ने मंदिर के लिए अपने कब्जे की कुछ जगह छोड़ी और उन्हें (मुस्लिम पक्ष को) उसके बदले पास की जगह दे दी गई। जिस जमीन पर मस्जिद बनी है, वह श्रीकृष्ण जन्मस्थान ट्रस्ट के नाम पर है। याचिका में कहा गया कि ऐसे में सेवा संस्थान द्वारा किया गया समझौता गलत है।

पहले कब पहुंचा था कोर्ट में मामला?

इससे पहले मथुरा के सिविल जज की अदालत में एक और वाद दाखिल हुआ था जिसे श्रीकृष्ण जन्म सेवा संस्थान और ट्रस्ट के बीच समझौते के आधार पर बंद कर दिया गया। 20 जुलाई, 1973 को इस संबंध में कोर्ट ने एक निर्णय दिया था। अपील में अदालत के उस फैसले को रद्द करने की मांग की गई है। इसके साथ ही यह भी मांग की गई है कि विवादित स्थल को बाल श्रीकृष्ण का जन्मस्थान घोषित किया जाए।

ट्रस्ट का तर्क

श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान ट्रस्ट (श्रीकृष्ण जन्मभूमि न्यास) के सचिव कपिल शर्मा ने कहा कि ट्रस्ट से इस याचिका या इससे जुड़े लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। इन लोगों ने अपनी तरफ से याचिका दायर की है। हमें इससे कोई मतलब नहीं है।

साम्प्रदायिक सद्भाव आवश्यक

इतिहास में हुई गलतियों का बोझ ढोने से बचा जाना चाहिए। आज देश अनेक संकटों और चुनौतियों से घिरा हुआ है। ऐसे में सबको मिलजुलकर रहना है। बाबरी का अध्याय बीत चुका अब किसी और नए विवाद को जन्म देना ठीक नहीं। विवादों का समाधान परस्पर बातचीत और सद्भाव से भी हो सकता है। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का यह कथन महत्वपूर्ण है कि काशी-मथुरा का विवाद संघ की कार्य सूची में नहीं है। दूसरी ओर विश्व हिंदू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा है कि वह राम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा होने तक काशी-मथुरा पर बात नहीं करेंगे। राम मंदिर निर्माण के बाद ही इस विषय पर विचार होगा।

जन्मस्थान का इतिहास

जिस जगह पर कृष्ण जन्मस्थान है, वह पांच हजार साल पहले मल्लपुरा क्षेत्र के कटरा केशवदेव में राजा कंस का कारागार हुआ करता था। इसी कारागार में रोहिणी नक्षत्र में आधी रात को भगवान कृष्ण ने जन्म लिया था।

इतिहासकार डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने कटरा केशवदेव को ही कृष्ण जन्मभूमि माना। विभिन्न अध्ययनों और साक्ष्यों के आधार पर कृष्णदत्त वाजपेयी ने भी स्वीकारा कि कटरा केशवदेव ही कृष्ण की असली जन्मभूमि है। इतिहासकारों के अनुसार, सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा बनवाए गए इस भव्य मंदिर को महमूद गजनवी द्वारा सन् 1017 ई. में लूटने के बाद तोड़ दिया था।

जनमान्यता के अनुसार, कारागार के पास सबसे पहले भगवान कृष्ण के प्रपौत्र ब्रजनाभ ने अपने कुलदेवता की स्मृति में एक मंदिर बनवाया था। यहां मिले ब्राह्मी लिपि शिलालेखों से पता चलता है कि यहां शोडास के राज्यकाल में वसु नामक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक मंदिर, उसके तोरण-द्वार और वेदिका का निर्माण कराया था। इतिहासकारों का मानना है कि सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में दूसरा मंदिर 400 ईस्वी में बनवाया गया था। यह भव्य मंदिर था। उस समय मथुरा संस्कृति और कला के बड़े केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ। इस दौरान यहां हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध और जैन धर्म का भी विकास हुआ।

खुदाई में मिले संस्कृत के एक शिलालेख से पता चलता है कि 1150 ईस्वी में राजा विजयपाल देव के शासनकाल के दौरान जज्ज नाम के एक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक नया विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। इसे 16वीं शताब्दी की शुरुआत में सिकन्दर लोदी के शासन काल में नष्ट कर दिया गया। इसके लगभग 125 वर्ष बाद मुगल सम्राट जहांगीर के शासनकाल में ओरछा के राजा वीर सिंह देव बुंदेला ने इसी स्थान पर चौथी बार मंदिर बनवाया। कहा जाता है कि औरंगजेब ने सन् 1669 में इसे तुड़वा दिया और इसके एक भाग पर ईदगाह का निर्माण करा दिया। यहां प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि इस मंदिर के चारों ओर एक ऊंची दीवार का परकोटा मौजूद था। मंदिर के दक्षिण-पश्चिम कोने में एक कुंआ भी बनवाया गया था।

बिड़ला ने की श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट की स्थापना

ब्रिटिश शासनकाल में वर्ष 1815 में नीलामी के दौरान बनारस के राजा पटनीमल ने इस जगह को खरीद लिया। सन् 1940 में जब पंडित मदन मोहन मालवीय यहां आए, तो जन्मस्थान की दुर्दशा से काफी निराश हुए। इसके तीन वर्ष बाद 1943 में उद्योगपति जुगलकिशोर बिड़ला मथुरा आए और वे भी श्रीकृष्ण जन्मभूमि की दुर्दशा देखकर दुखी हुए। इसी दौरान मालवीय जी ने बिड़ला को श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पुनर्रुद्धार को लेकर एक पत्र लिखा। मालवीय जी की इच्छा का सम्मान करते हुए बिड़ला ने सात फरवरी 1944 को कटरा केशवदेव को राजा पटनीमल के तत्कालीन उत्तराधिकारियों से खरीद लिया। इससे पहले कि वे कुछ कर पाते मालवीय जी का देहांत हो गया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार, बिड़ला ने 21 फरवरी 1951 को श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट की स्थापना कर मंदिर का निर्माण कार्य शुरू किया जो 1982 में पूरा हुआ। उक्त तथ्यों को अदालत में दायर याचिका में शामिल भी किया गया।

350 साल बाद ज्ञानवापी कूप होगा विश्वनाथ मंदिर का हिस्सा

दूसरी ओर काशी (वाराणसी) का ज्ञानवापी कूप जल्द ही बाबा विश्वनाथ मंदिर का हिस्सा बन जाएगा। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के निर्माण के तहत 350 साल बाद एक बार फिर यह प्रधान शिवालय आदि विश्वेश्वर मंदिर के परिक्रमा मंडप में शामिल होगा। विश्वनाथ मंदिर गर्भगृह के चारों ओर विशाल परिक्रमा मंडप बन रहा है। इसके उत्तरी हिस्से में ज्ञानवाणी कूप है। इस मंडप का निर्माण खूबसूरत मेहराबदार पत्थरों से कराया जा रहा है। पूरब से पश्चिम की ओर करीब 40 फुट आगे बढ़ते ही परिक्रमा मंडप, ज्ञानवाणी कूप को अपनी परिधि में ले लेगा। बताया जाता है कि औरंगजेब काल में तोड़े जाने से पहले ज्ञानवापी और ज्ञानवापी कूप विश्वेश्वर मंदिर परिसर में ही थे। प्रोजेक्ट प्रभारी शशिकांत के मुताबिक परिक्रमा मंडप के लिए मुख्य मंदिर के चारों तरफ बेस तैयार है। मुगल बादशाह औरंगजेब ने 18 अप्रेल 1669 को फरमान जारी करके काशी के ज्ञानवापी स्थित तत्कालीन आदिविश्वेश्वर मंदिर को ध्वस्त करने का आदेश दिया था। बताया जाता है कि ज्ञानवापी और काशी एक-दूसरे के पूरक हैं।

अनुरोध

'प्रत्यूष' आपकी अपनी पारिवारिक पत्रिका है। इसे अपने परिवार में अवश्य सम्मिलित कीजिए। पत्रिका आपको कैसी लगी? कृपया अपने विचार हमें अवश्य भिजावें।

E-mail : pankajkumarsharma2013@gmail.com **Whatapp No. : 75791 1992**

Happy Diwali

Khushwant Gaur
+91-77378 53427

Devraj Gaur
Director
+91-94131 80290

PULSE
Badminton Academy
JUST HIT IT

New Bhopalpura, CPS School Road
Opp. Winsom Furniture Showroom, Udaipur

khushwantgaur1@gmail.com

'सूचना का अधिकार' सरकार व सरकारी तंत्र को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने का प्रभावी उपकरण है। यह जनता के पास 'ब्रह्मास्त्र' की तरह सुरक्षित है। यह हर नागरिक को अपने देश की व्यवस्था का प्रहरी बनने की ताकत देता है। इस कानून को लागू हुए 15 साल का लम्बा कालखण्ड बीत चुका किन्तु अब तक इसके प्रचार-प्रसार और सूचना आयोगों को सुदृढ़ बनाने की कोई सार्थक पहल नहीं हो पाई है। इसका मूल कारण इस अधिकार के प्रति सरकारी तंत्र की नकारात्मक मनोवृत्ति ही है। अतएव इस दिशा में जनान्दोलन की ज़रूरत है। इस दिशा में खामियों और सुझावों पर प्रस्तुत है, मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व सूचना आयुक्त आत्मदीप का सुझावात्मक आलेख।

जनता का ब्रह्मास्त्र है सूचना का अधिकार। सरकार व सरकारी तंत्र को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने और सार्वजनिक क्रियाकलाप में शुचिता एवं पारदर्शिता लाने का यह प्रभावी उपकरण है। यह हर नागरिक को अपने देश की व्यवस्था का पहरेदार (चौकीदार) बनने की ताकत देता है। मौजूदा व्यवस्था ने इस मौलिक अधिकार की राह कठिन बना दी है, जिस पर राष्ट्रीय बहस की आवश्यकता है।

देश में यह कानून लागू होने से अब तक 15 सालों में सूचना के अधिकार के प्रचार-प्रसार के लिए कोई सार्थक कदम नहीं उठाये गये हैं। नतीजा यह कि देश की अधिकतर आबादी अपने इस अधिकार की जरूरी जानकारी से अभी तक वंचित है। इसके चलते बमुश्किल एक फीसदी आबादी ही इसका उपयोग कर पा रही है। सीबीएसई की तरह राज्यों के शिक्षा बोर्ड भी अपने पाठ्यक्रम में इस कानून को शामिल कर नई पीढ़ी को इसके प्रति जागरूक बना सकते हैं।

दुर्भाग्यवश इस अधिकार के प्रति सरकारी तंत्र की नकारात्मक मनोवृत्ति बनी हुई है। इसके कारण जनता को चाही गई जानकारी नियत समय सीमा में नहीं मिल पाती। आरटीआई एक्ट के क्रियान्वयन से जुड़े लोकसेवकों को नियमित रूप से इसका प्रशिक्षण देने के कानूनी प्रावधान का पालन भी सरकारें नहीं कर रही हैं। इस कर्तव्यविमुखता के चलते लोकसेवकों के बड़े हिस्से को इस कानून का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है। इस कानून में हर दफ्तर में रिकॉर्ड का सरल व सुव्यवस्थित प्रबंधन कराने का अनिवार्य प्रावधान है, लेकिन सरकारें इसकी अनुपालना कराने में विफल रहीं।

बड़ी सख्या में प्रथम अपीलीय अधिकारी अपने अर्द्धन्यायिक दायित्व का न्यायोचित ढंग से निर्वहन नहीं करते हैं। उन्हें दंड देने की शक्ति न दिये जाने के कारण प्रथम अपील पर दिये गये उनके आदेश का कई लोक सूचना अधिकारी पालन नहीं करते। इसमें सुधार के लिए अपीलीय अधिकारियों को समुचित प्रशिक्षण व दंडात्मक शक्ति देना और कर्तव्यविमुख अपीलीय अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही का प्रावधान किया जाना आवश्यक है।

स्वीकृत पदों पर नियुक्तियां समय पर हों

सूचना आयोगों को और सुदृढ़ बनाने में भी सरकारें कोताही बरत रही हैं। वे इन आयोगों में स्वीकृत पदों व आवश्यकतानुसार पर्याप्त संख्या में सूचना आयुक्तों की नियुक्तियां समय पर नहीं करती हैं। वे आयोगों को जरूरत के मुताबिक कार्यकुशल स्टॉफ मुहैया कराने का जिम्मा भी ठीक से नहीं निभाती। नतीजतन लोगों की शिकायतों व अपीलों के निराकरण में अनावश्यक देरी होती है। काफी मामलों में ऐसा होता है कि आयोग के आदेश के बाद जब तक आवेदक को मांगी गई जानकारी मिलती है, तब तक उसकी उपयोगिता ही खत्म हो जाती है। साल दो साल बाद जानकारी मिलने से सूचना के अधिकार का उद्देश्य ही परास्त हो जाता है।

अधिकतर सरकारें मुख्य सूचना आयुक्त व सूचना आयुक्त के पदों पर नियुक्ति में सुपात्र नागरिकों की बजाय सेवानिवृत्त नौकरशाहों को प्राथमिकता देती है, भले ही उन नौकरशाहों का सेवाकाल कैसा भी रहा हो। यानी उनका चयन भी मेरिट के आधार पर नहीं किया जाता है। जबकि नौकरशाहों की जगह योग्य नागरिकों को नियुक्ति में प्राथमिकता देकर लोकहित व शासनहित को अधिक साधा जा सकता है।

भारत सरकार द्वारा गठित सरकारिया आयोग की संसद में स्वीकृत सिफारिशों में स्पष्ट कहा गया कि सूचना आयोगों में सिविल सोसायटी के श्रेष्ठ जनों को अधिक से अधिक संख्या में नियुक्त किया जाना चाहिए, रिटायर्ड नौकरशाहों को नहीं। क्योंकि नौकरशाहों में सूचनाएं दबाने छुपाने की स्वभावतः प्रवृत्ति होती है। वीरप्पा मोईली की अध्यक्षता में गठित दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग ने 9 जून 2006 को भारत सरकार को 'सूचना का अधिकार : सुशासन की कुंजी' विषयक रपट सौंपी थी। उसमें भी सूचना आयोगों में गैर नौकरशाहों को नियुक्त करने की सिफारिशें की गई हैं। पर सरकारें इसके एकदम उलट भूमिका निभा रही हैं।

आयोग के निर्णय पर पुनर्विचार का प्रावधान हो

कुछ सूचना आयुक्त शिकायतों व अपीलों पर त्रुटिपूर्ण आदेश पारित कर देते हैं। ये आदेश आरटीआई एक्ट के प्रावधानों, न्यायिक विवेक और प्राकृतिक न्याय व न्याय शास्त्र के सिद्धांतों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। ऐसे आदेश लोगों को बुरी तरह आहत करते हैं। ऐसे गलत फैसलों से निजात पाना जनता के लिए आसान नहीं हैं। कारण कि मुख्य सूचना आयुक्त व आयुक्तों के निर्णय अंतिम व सभी पक्षों के बाध्यकारी होते हैं। ये आयुक्त अपील या शिकायत पर पारित अपने आदेश पर पुनर्विचार की मांग भी प्रायः ठुकरा देते हैं। यह कहकर कि आयोग को अपने फैसले का पुनरीक्षण करने का अधिकार नहीं हैं। आयोग के फैसलों के खिलाफ कहीं अपील भी नहीं की जा सकती। सिर्फ हाईकोर्ट में रिट याचिका दायर की जा सकती है, जिस पर होने वाला खर्च ज्यादातर लोग वहन नहीं कर पाते हैं। ऐसे में आयोग के गलत निर्णय से व्यथित लोग मायूस होकर रह जाते हैं। इस व्यवहारिक समस्या के समाधान के लिए ऐसा कानूनी उपाय करने की बेहद जरूरत है जो आम आदमी की पहुंच में हो।

अधिकार का दुरूपयोग भी रोका जाए

एक बात और, सूचना का अधिकार सद्भाविक प्रयोजन के लिए दिया गया है। इसका दुरूपयोग करना इस अधिकार के पावन ध्येय के साथ दुष्कृत्य करने के समान है। पर कई लोगों ने खुद को आरटीआई कार्यकर्ता घोषित करते हुए सूचना के अधिकार को सूचना का रोजगार बना लिया है। ऐसे लोग किसी से बदला लेने, व्यक्ति विशेष को परेशान करने, कारोबारी हित या निजी स्वार्थ साधने के लिए इस पवित्र अधिकार का बेजा इस्तेमाल करते हैं। किसी भी तरह अनुचित लाभ उठाने की फिराक में रहने वाले ऐसे लोग आये दिन, हर कहीं आरटीआई, शिकायतें व अपीलें दायर करते हैं। इनके मामले निपटाने पर सार्वजनिक संसाधनों का बहुत अपव्यय होता है। इनके कारण सदुपयोग करने वालों को जरूरी जानकारी/राहत मिलने में भी देरी होती है और इस कानून की छवि भी बिगड़ती है।

राहत

बाल झड़ने से दुखी हैं?

क्या आप बाल झड़ने की समस्या से परेशानी हैं? तेल-शैंपू बदलने से लेकर स्वस्थ खानपान और योग-व्यायाम तक सब अपनाकर देख लिया, पर कुछ खास फायदा नहीं हो रहा है? अगर हां तो एक बार तकिये पर सिल्क का लिहाफ चढ़ाकर देखें।

ब्रिटेन स्थित पल्स लाइट क्लीनिक के हालिया अध्ययन में सूती कपड़े से बने तकिया के लिहाफ को भी बाल टूटने की अहम वजह बताया गया है।

शोधकर्ता शैनल ब्लेक के मुताबिक रात में सोते समय व्यक्ति कई बार करवट बदलता है। इससे बाल तकिये पर रगड़ खाते हैं। चूंकि, सूती कपड़ा थोड़ा रूखा होता है, इसलिए जड़ें कमजोर पड़ने लगती हैं। वहीं, सिल्क के कपड़े से बना लिहाफ मखमली होता है। इससे करवट लेने पर जड़ों को नुकसान नहीं पहुंचता और बाल भी नहीं उलझते।

Happy Diwali

Rahul R. Choudhary
Mob. : 96944 46002

Rajesh B. Choudhary
Mob. : 98872 42220

Sharda Medical Store

शारदा मेडिकल स्टोर

Ph.: 0294-2429289, 2413372 (S)

शॉप नं. 1-2, श्रीनाथ प्लाजा, हॉस्पीटल रोड, उदयपुर (राज.)

मौसम बदला दिनचर्या भी बदलें

कोविड-19 संकट के दौरान मौसमी बीमारियों का होना, कहीं आपकी समस्या को बढ़ा न दे। बेहतर होगा कि आप बदलते मौसम के हिसाब से अपनी दिनचर्या में थोड़ा बदलाव लाएं और समय-समय पर निकटवर्ती चिकित्सक से सलाह लेते रहें।

✍ डॉ. शीतल मीणा

कोविड-19 का संक्रमण से खत्म नहीं हुआ है, इस बदलते मौसम में आम फ्लू या सर्दी-जुकाम को हल्के में लेना आपकी समस्या को और बढ़ा सकता है। इन दिनों तापमान में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। इसकी वजह से सर्दी-जुकाम, गले में खराश, सूखी खांसी, सिरदर्द, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, बुखार आदि की समस्याएं दिखने भी लगी हैं। इन मौसमी बीमारियों से बचने के लिए अब आपको अपनी दिनचर्या में थोड़ा बहुत बदलाव कर लेना चाहिए।

बदलें रूटीन

खानपान के रूटीन में बदलाव करके भी सेहत सम्बन्धी समस्याओं को कम किया जा सकता है। इन दिनों गरिष्ठ भोजन बहुत ज्यादा कैफीन युक्त पदार्थ लेना या वसायुक्त खाने का सेवन सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है। इम्युनिटी को बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों को अपने खाने में शामिल करें। अधिक मात्रा में मोटे अनाज, फल, सब्जियां और प्रोटीन आदि का प्रयोग करें।

सूरज की रोशनी में बैठें

अधिक समय तक कमरों में ही न रहकर प्रतिदिन सुबह कुछ समय सूरज की रोशनी में भी गुजारें। इससे शरीर में विटामिन डी की मात्रा बढ़ेगी, जो इम्युनिटी बढ़ाने की दृष्टि से जरूरी है।

व्यायाम भी करें

कोरोना या मौसमी संक्रमण से सावधानी आवश्यक है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप एक ही जगह स्थिर बैठ जाएं। शारीरिक गतिविधियों के रूप में आपके पास व्यायाम का विकल्प मौजूद है। नियमित व्यायाम से आपके शरीर में वायरस से लड़ने वाले 'व्हाइट ब्लड सेल्स' का संचरण ठीक से होता रहेगा। व्यायाम न करने का बहाना मत ढूंढिए। सुबह-शाम टहलना भी अच्छा रहेगा। व्यायाम आपके लिए कौनसे अनुकूल होंगे, इसकी डॉक्टर से सलाह लें।

पर्याप्त नींद भी जरूरी

आठ घंटे से कम सोते हैं या सोने जागने का समय सही नहीं है, तो इससे रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो सकती है। इसलिए हर रोज अच्छी गुणवत्ता वाली पर्याप्त नींद जरूर लें। तनाव से मुक्ति के लिए भी यह आवश्यक है।

ऊर्जा मिले, वही आहार

◆ शरीर में विटामिन सी की मात्रा बढ़ाएं। इसके लिए सिट्रस यानी खट्टे फल, हरी मिर्च, स्ट्रॉबेरी और अनानास का सेवन ठीक रहेगा। मौसमी फल व सब्जियों का जूस भी ले सकते हैं। ◆ लहसुन सर्दी-जुकाम और फ्लू के लक्षण को कम करता है। इसे कच्चा खाना या जूस में पीना ज्यादा फायदेमंद होगा। ◆ नाक बंद हो, गले में खराश या बुखार हो तो तत्काल डॉक्टर से परामर्श लें। ◆ अदरक का पानी, गर्म नींबू पानी। अदरक का पानी भी उबला हुआ ठंडा करके सेवन करें। कॉफी, सोडा और मीठे पेय पदार्थों से बचें, इससे शरीर से पानी की कमी हो सकती है।

अकालियों से दोस्ती का टूटना

भाजपा को चुनौती और अवसर भी

पंजाब में संसद द्वारा पारित कृषिविधेयकों का किसानों द्वारा विरोध प्रदर्शन।

डेढ़ साल बाद पंजाब में होने वाले विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए आपदा को अवसर में बदलने का मौका है। संभवतः इसी बात के मद्देनज़र कृषि विधेयक को लेकर अकालियों से रार को भाजपा ने अपने लिए लाभकारी ही माना है। इसी विषय पर प्रस्तुत है - **जगदीश सालवी** का विश्लेषणात्मक आलेख

किसानों के लिए लाए गए कृषि संबंधी तीन विधेयकों को मोदी सरकार संसद से पारित कराने में सफल रही है, लेकिन भाजपा से शिरोमणि अकाली दल ने गठबंधन तोड़ लिया है। अकाली और भाजपा की 22 साल पुरानी दोस्ती ऐसे समय टूटी है जब राज्य के विधानसभा चुनाव में मात्र डेढ़ साल बाकी है। ऐसे में पंजाब की राजनीति में भाजपा को एक तरफ तो अपने अस्तित्व को बचाए रखना चुनौती है जबकि दूसरी ओर राज्य में अपना राजनीतिक विस्तार बढ़ाने का अवसर भी है। ऐसे में देखना होगा कि क्या भाजपा आपदा को अवसर में तब्दील कर पाएगी?

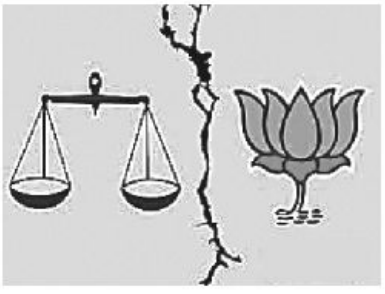

अकाली दल के साथ भाजपा का गठबंधन 1997 में हुआ था। पंजाब में 1999 के लोकसभा और 2002 और 2017 के विधानसभा चुनावों में गठबंधन के बुरे प्रदर्शन के बावजूद मैत्री जारी रही। इस दौरान भाजपा की जितनी भी केन्द्र में सरकार बनी सबमें अकाली दल का प्रतिनिधित्व रहा। यही नहीं 1997 में भाजपा के साथ आने का राजनीतिक फायदा अकाली दल को मिला और प्रकाश सिंह बादल मुख्यमंत्री बने। पंजाब में पहली बार किसी गैर-कांग्रेसी दल की सरकार ने पांच साल का सफर पूरा किया था।

जनाधार बढ़ाने का मौका

पंजाब की कुल 117 सीटों में से भाजपा महज 23 सीटों पर चुनाव लड़ती रही है, लेकिन अकाली दल से अलग होने के बाद अब उसे पूरे राज्य में आधार बढ़ाने का मौका मिल गया है। हालांकि, ऐसा नहीं है कि भाजपा कभी अकाली दल से अलग नहीं होना चाहती थी। ऐसी कोशिश भाजपा की प्रदेश इकाई की तरफ से कई बार हुई, लेकिन हर बार पार्टी हाईकमान के हस्तक्षेप से समझौते होते रहे। भाजपा के प्रदेश महासचिव डॉ. सुभाष शर्मा ने कहा कि अकाली दल के अलग होने के बाद हमारे पास अब उन इलाकों में जाने का मौका आ गया है, जहां अभी तक हम अकाली दल के चलते कभी गए ही नहीं। ऐसे में नई जगहों पर जड़ें जमाना आसान नहीं होगा, लेकिन अब यह हमारी मेहनत पर निर्भर करेगा कि हम इन जगहों पर किस तरह अपनी पकड़ बनाते हैं। महाराष्ट्र में शिवसेना से भाजपा अलग होकर आज सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है। ऐसे ही पंजाब में भी हम अपना राजनीतिक आधार बढ़ा सकते हैं।

भाजपा की असली परीक्षा

पंजाब में शहरी मतदाता भाजपा का मजबूत आधार रहा है, लेकिन उसने ग्रामीण इलाकों में भी पकड़ बनाने की कोशिश शुरू कर दी थी। ऐसे में अकाली दल से भाजपा के अलग होने का लाभ-हानि का पहला स्वाद नवम्बर-दिसम्बर में होने वाले स्थानीय निकाय चुनाव में चखने को मिलेगा। भाजपा को निकाय चुनाव में अकेले किस्मत आजमाना होगा और यह उसकी असली परीक्षा होगी।

भाजपा सरकार से समर्थन वापस लेने की घोषणा करते हुए अकाली नेता सुखदेव सिंह बादल व केन्द्रीय मंत्रीमण्डल से इस्तीफा देने वाली उनकी पत्नी हरसिमरत कौर।

गांवों में भाजपा की पगडंडी

कृषि विधेयकों को लेकर किसान बहुल ग्रामीण इलाकों में भाजपा के लिए राजनीतिक राह और कठिन हो सकती है। सूबे के किसानों की शंकाएं दूर करने के लिए भाजपा ने गांवों में जाकर जनसम्पर्क करने की योजना बनाई है, लेकिन किसान संगठनों ने एलान कर दिया है कि कृषि विधेयक का समर्थन करने वालों को गांवों में घुसने नहीं देंगे। ऐसे में भाजपा के लिए ग्रामीण इलाकों में अपने राजनीतिक आधार को मजबूत करना एक बड़ी चुनौती है।

हिन्दू वोटों पर दृष्टि

पंजाब की राजनीति का इतिहास रहा है कि भाजपा जब भी कमजोर हुई है, उसका लाभ कांग्रेस को मिला है। यही वजह कि अकाली-भाजपा गठबंधन टूटने से कांग्रेस को अपना सियासी फायदा नजर आ रहा है। दरअसल, पंजाब में 1997 के दौरान जब भाजपा को 18 सीटें मिलीं तो प्रदेश में सरकार अकाली-भाजपा की बनी। 2002 में भाजपा 3 सीटों पर सिमट गई और प्रदेश में सरकार कांग्रेस की बनी, 2007 में 19 और 2012 में 12 सीटें भाजपा को मिलीं तो प्रदेश में कांग्रेस सत्ता से दूर रही। 2017 के विधानसभा चुनाव के नतीजे को देखें भाजपा की महज 3 सीटें आईं और सत्ता कांग्रेस को मिली। इससे साफ जाहिर है कि हिन्दू वोट के बंटने का फायदा कांग्रेस को होता है।

वोटों का हिन्दू गढ़

पंजाब का मालवा इलाका हिन्दू वोटों का गढ़ माना जाता है, जहां करीब 67 विधानसभा सीटें आती हैं। यहां भाजपा के चलते अकाली दल को सियासी फायदा होता रहा है, क्योंकि भाजपा के चलते हिन्दू वोट बैंक अकाली दल के पक्ष में जाता रहा है, हालांकि, अकाली दल से भाजपा के गठबंधन होने के चलते हिन्दू मतदाताओं की पसंद कांग्रेस बनी हुई है। ऐसे में अब इन वोटों पर सीधे कांग्रेस और भाजपा के बीच लड़ाई होगी। पंजाब के पांच बार विधानसभा और पांच बार लोकसभा चुनाव अकाली दल और भाजपा ने मिलकर लड़े। पंजाब को सत्ता में तीन बार गठबंधन काबिज हुआ था।

कांग्रेस भी कमजोर नहीं

2007 और 2012 के विधानसभा चुनावों में अकाली दल- भाजपा का गठबंधन कामयाब रहा। इन दोनों चुनाव में एनडीए ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया था। 2012 के विधानसभा चुनाव में अकाली दल को 34.75 प्रतिशत और 2007 में 37.09 प्रतिशत वोट मले थे जबकि भाजपा को 2007 में 8.28 प्रतिशत वोट मिले थे जो 2012 में घटकर 7.13 फीसदी रह गया था। पंजाब के इन दोनों चुनाव में कांग्रेस 40 फीसदी से अधिक वोट मिलने के बावजूद सत्ता नहीं पा सकी थी क्योंकि एनडीए गठबंधन को 41 फीसदी से अधिक वोट मिला था। 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा और उसे 38.50 फीसदी वोट मिले और उसके 77 विधायक चुनकर विधानसभा में पहुंचे। 2017 के विधानसभा चुनाव में सबसे अधिक नुकसान भाजपा का हुआ, जिसके महज 3 विधायक ही जीत सके थे और उसका वोट प्रतिशत 5.4 फीसदी पर सिमट गया। ऐसे में भाजपा के लिए अब इससे बुरा दौर पंजाब में नहीं आएगा। हालांकि, अकाली को 15 सीटें और 25.2 फीसदी वोट मिल सके जबकि आम आदमी पार्टी 20 विधायकों के साथ 23.7 प्रतिशत वोट हासिल किए।

2022 में नफा-नुकसान

दरअसल, पंजाब में अकाली दल से वोटरों का मोह भंग हुआ है और पार्टी में दो फाड़ हो गए हैं। अकाली दल के कई दिग्गज नेता पार्टी छोड़ चुके हैं। 2022 के विधानसभा चुनावों में अकाली दल को सत्ता तभी हासिल हो सकती है जबकि उसको 40 फीसदी से ऊपर वोट मिले। लेकिन भाजपा के साथ नाता तोड़ने के बाद सुखबीर बादल के लिए बहुत कठिन लक्ष्य हो गया है। दूसरी तरफ भाजपा के सामने पूरे प्रदेश में राजनीतिक ग्राफ बढ़ाने का मौका जरूर हाथ लग गया है। ऐसे में देखना है कि भाजपा अब पंजाब में अपने सियासी आधार को कैसे मजबूत कर पाती है।

इंदिरा के नाम

राजनीति के खास आयाम

✍ डा. प्रीतम जोशी

जन्म 19 नवम्बर 1917 निधन 31 अक्टूबर 1984

इन्दिरा गांधी ने न केवल भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए, बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज पर भी वे एक युग बन कर छाई रहीं। राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र की अखण्डता, राजनीति और लोक कल्याण आदि उन्हें अपने दादा पं. मोतीलाल नेहरू और पिता पं. जवाहर लाल नेहरू से विरासत में मिले थे।

आजादी के बाद के भारत ने पं. जवाहरलाल-कमला नेहरू की एक मात्र पुत्री इंदिरा गांधी को एक विलक्षण नेत्री के रूप में देखा। जिन्होंने विश्व में भारत के गौरव और सम्मान को बढ़ाया। वर्ष 1957 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद 27 वर्ष लम्बे अपने राजनीतिक कॅरियर में इंदिराजी ने देश के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने नए सिरे से विकास की प्रक्रिया को शुरू किया।

इंदिरा गांधी ने हरित क्रांति के जरिए गांवों में कृषि का आधुनिकीकरण करते हुए सामाजिक विकास का पथ प्रशस्त किया। वे चाहती थीं कि अन्न उत्पादन के मामले में भारत आत्मनिर्भर बने और उसे विकसित देशों के सामने झोली फैलाने को मजबूर न होना पड़े। उन्होंने आर्थिक संस्थाओं को समावेशी बनाया, ताकि किसानों को उत्पादन के लिए प्रोत्साहन मिलता रहे। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि गरीबों को दो जून की रोटी पाने का अधिकार है। 'गरीबी हटाओ' के उनके नारे को कइयों ने चुनावी चोंचला कहकर खारिज कर दिया था, जबकि वह गरीबों के सशक्तीकरण की सार्थक मुहिम थी।

कार्यकारी समिति में सदस्य

1955 से वह सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी की कार्यकारी समिति की सदस्य रहीं और 1959 में पार्टी की अध्यक्ष चुनी गई। नेहरू के बाद 1964 में प्रधानमंत्री बने लाल बहादुर शास्त्री ने उन्हें अपनी सरकार में सूचना और प्रसारण मंत्री बनाया।

साहसिक निर्णय

श्रीमती गांधी ने 70 के दशक में बैंकों, खदानों और तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया। राजा-महाराजाओं की पदवियां और विशेषाधिकार समाप्त कर दिए। 1971 के उत्तरार्द्ध में पूर्वी बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) द्वारा पाकिस्तान से अलग होने के संघर्ष का जोरदार समर्थन किया और भारत की सशस्त्र सेनाओं ने पाकिस्तान पर त्वरित और निर्णायक जीत हासिल की। जिसके फलस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

आपातकाल

मार्च 1972 में पाकिस्तान पर भारत की जीत के बाद श्रीमती गांधी ने राष्ट्रीय चुनावों में अपनी नई कांग्रेस पार्टी की जोरदार जीत का नेतृत्व किया। कुछ ही समय बाद उनके पराजित समाजवादी प्रतिद्वन्दी ने उन पर चुनाव नियमों के उल्लंघन का आरोप लगाया। जून 1975 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने उनके खिलाफ फैसला सुनाया। जिससे उनकी संसद की सदस्यता समाप्त हो जाती और उन्हें छः वर्ष के लिए राजनीति से अलग रहना पड़ता।

प्रतिक्रियास्वरूप उन्होंने समूचे भारत में आपातकाल की घोषणा कर दी। अपने राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियों को गिरफ्तार करवा लिया और आपातकालीन शक्तियां हासिल कर के व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित करने संबंधी कई कानून बनाए। इस काल में उन्होंने कुछ अलोकप्रिय कार्यक्रम भी चलाए, जिनमें बड़े पैमाने पर नसबंदी (जन्म नियंत्रण का एक उपाय) कार्यक्रम भी शामिल था। जब लम्बे समय तक स्थगित राष्ट्रीय चुनाव 1977 में हुए, तो श्रीमती गांधी और उनकी पार्टी की करारी हार हुई, जिसके बाद उन्हें पद छोड़ना पड़ा।

कांग्रेस-(इ) की स्थापना

1978 के आरम्भ में श्रीमती गांधी के समर्थक कांग्रेस पार्टी से अलग हो गए और अपने नाम पर कांग्रेस-(इ) पार्टी की स्थापना की। सरकारी भ्रष्टाचार के आरोप में श्रीमती गांधी कुछ समय तक जेल (अक्टूबर 1977 और दिसम्बर 1978) में रहीं। इन झटकों के बावजूद नवम्बर 1978 में वह नई संसदीय सीट से चुनाव जीतने में कामयाब रहीं और उनकी कांग्रेस-इ पार्टी धीरे-धीरे फिर से मजबूत होने लगी। सत्तारूढ़ जनता पार्टी में अंतर्कलह के कारण अगस्त 1979 में सरकार गिर गई। जब जनवरी 1980 में लोकसभा के लिए चुनाव हुए तो श्रीमती गांधी और उनकी पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में लौट आई। उनके प्रमुख राजनीतिक सलाहकार, उनके पुत्र संजय गांधी भी लोकसभा की सीट पर विजयी रहे। इंदिरा और उनके पुत्र के खिलाफ चल रहे सभी कानूनी मुकदमे वापस ले लिए गए।

ऑपरेशन ब्लू स्टार और हत्या

जून 1980 में एक वायुयान दुर्घटना में संजय गांधी की मृत्यु ने भारत के राजनीतिक नेतृत्व के लिए इंदिरा गांधी के चुने हुए उत्तराधिकारी को समाप्त कर दिया। संजय की मृत्यु के बाद इंदिरा ने अपने दूसरे पुत्र राजीव गांधी को पार्टी के नेतृत्व के लिए तैयार किया। 1980 के दशक के आरम्भ में इंदिरा गांधी को भारत की राजनीतिक अखंडता के खतरों से जूझना पड़ा। कई राज्य केन्द्र सरकार से अधिक स्वतंत्रता की मांग करने लगे तथा पंजाब में सिख आतंकवादियों ने स्वायत्तता राज्य की मांग पर जोर देने के लिए हिंसा का रास्ता अपना लिया। जवाब में श्रीमती गांधी ने जून 1984 में सिखों के पवित्रतम धर्मस्थल अमृतसर के स्वर्ण मंदिर पर सेना के हमले के आदेश दिए, जिसके फलस्वरूप 450 से अधिक सिखों की मृत्यु हो गई। स्वर्ण मंदिर पर हमले के प्रतिकार में पांच महीने के बाद ही श्रीमती गांधी के आवास पर तैनात उनके दो सिख अंगरक्षकों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं

महावीर लाल जैन
विनोद जैन

नवकार

नवकार मेटल

7, भांग गली, सूरजपोल अन्दर,
उदयपुर, फोन : 0294 2417354

नवकार स्टील

6, चौखला बाजार, चित्तौड़ा मन्दिर के नीचे,
भोपालवाड़ी, उदयपुर, फोन : 0294 2420579

डीलर : स्टील, पीतल, तांबा, एल्यूमीनियम बर्तन, गिफ्ट आईटम और कुकर पार्ट्स के होलसेल व रिटेल विक्रेता।

चीन को सबक की बड़ी तैयारी

इज़रायल-भारत बनाएंगे 'हाईटेक वेपन सिस्टम'

✍ नंद किशोर शर्मा

चीन ने धोखे से 1962 का युद्ध क्या जीत लिया, उसने धोखेबाजी को भारत के खिलाफ अभियानों का आधार ही बना लिया। अब जब भारत धोखे से जमीन हड़पने की उसकी कोशिशों पर पानी फेर रहा है तो वह बिलबिला उठा है। भविष्य में उसकी यह बिलबिलाहट अधिक बढ़ने वाली है क्योंकि भारत ने उसे धौंस जमाने से लेकर युद्धभूमि में रूबरू होने तक, हर मोर्चे पर मात देने के पुख्ता इंतजाम आरंभ कर दिए हैं।

सबक की बड़ी रणनीति

भारत ने इजरायल के साथ मिलकर अत्याधुनिक हथियारों का पूरा तंत्र विकसित करने की महत्वपूर्ण योजना बनाई है। इसके लिए भारत और इजरायल के रक्षा सचिव की अगुवाई में रक्षा सहयोग पर संयुक्त कार्यसमूह के भीतर एक नया सब-ग्रुप बना दिया गया है।

इस रक्षा औद्योगिक सहयोग पर उप-कार्यसमूह का मुख्य काम तकनीक के हस्तांतरण, रक्षा उपकरणों का संयुक्त विकास और उत्पादन, तकनीकी सुरक्षा, कृत्रिम मेधा, नवाचार और तीसरे देशों को संयुक्त निर्यात सुनिश्चित करना होगा। भारत को हथियारों के आपूर्तिकर्ता देशों की लिस्ट में इजरायल करीब दो दशकों से चौथे स्थान पर कायम है। वह भारत को हर साल करीब 1 लाख डॉलर (करीब 70 अरब रुपये) मूल्य का सैन्य सामान निर्यात करता है।

अब जब भारत का रक्षा उद्योग भी मजबूत हो रहा है तब दोनों देशों के बीच अनुसंधान एवं विकास (आर एण्ड डी) के साथ-साथ साझे विकास एवं उत्पादन की परियोजनाएं बढ़ने की संभावनाएं प्रबल होती दिख रही हैं। इजरायल मिसाइलों, सेंसरों, साइबर सिक्योरिटी और वायरस डिफेंस सब-सिस्टम्स के क्षेत्र में विश्व में नेतृत्व करता है। बहरहाल, भारतीय रक्षा मंत्रालय में रक्षा उद्योग एवं उत्पादन के संयुक्त सचिव संजय जाजू और इजरायली रक्षा मंत्रालय में एशिया एंड पेसिफिक रीजन के डायरेक्टर इयाल कैलिफ नवनिर्मित उप-समूह के नेतृत्वकर्ता हैं।

करीब आ रहे दोनों

एक समाचार एजेन्सी के अनुसार दोनों राष्ट्रों के बीच यह पहल ऐसे वक्त में हुई है जब भारतीय सशस्त्र बलों में सतह से हवा में मार करने वाले अगली पीढ़ी के बराक-8 मिसाइल सिस्टम्स शामिल किए जा रहे हैं। ये 30 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा मूल्य के तीन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और इजरायली एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई) की साझी परियोजनाओं का हिस्सा हैं।

आईएआई, राफेल अडवांस्ड डिफेंस सिस्टम्स, एल्बिट और एल्स्टा सिस्ट्म्स जैसी इजरायल कंपनियों ने भारतीय कंपनियों के साथ सात संयुक्त उपक्रम भी लगाए हैं। इसके तहत, कल्याणी ग्रुप और राफेल अडवांस्ड सिस्टम्स के बीच एक समझौता पत्र पर दस्तखत हुए हैं।

भारत के पास इजरायल के ये हथियार

इजरायल के साथ रक्षा सहयोग को तब से मजबूती मिलने लगी जब इजरायल ने 1999 में पाकिस्तान के साथ हुए कारगिल युद्ध के दौरान भारत को आपातकालीन परिस्थितियों में हथियार भेजे। 2014 में केन्द्र में मोदी सरकार के आने के बाद दोनों देशों के बीच रक्षा संबंध और भी मजबूत हुए। भारतीय सशस्त्र बलों ने अब तक अपने बेड़े में फालकॉन अवाक्स और हेरॉन, सर्चर-2 और हार्लोप ड्रोन से लेकर बराक एंटी-मिसाइल डिफेंस सिस्टम्स एवं स्पाइडर क्विक-रिएक्शन एंटी-एयरक्राफ्ट मिसाइल सिस्टम्स तक शामिल कर लिया है।

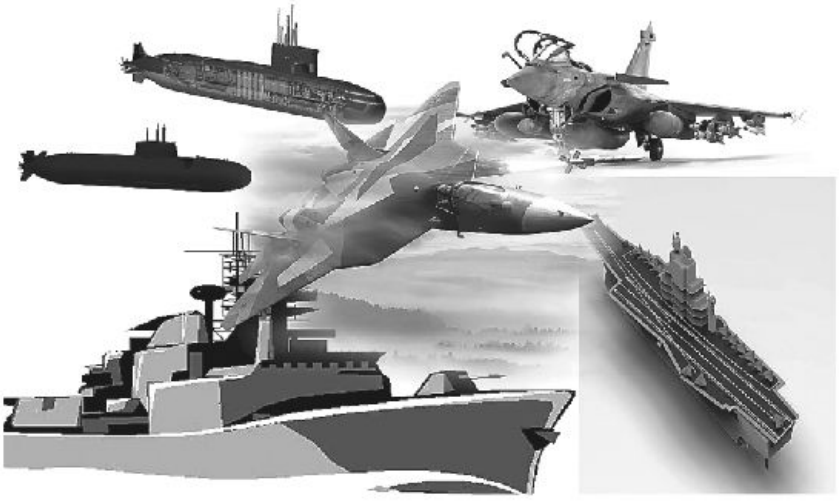

साथ ही, भारत ने इजरायल से पाइथन और डर्बी एयर-टु-एयर मिसाइल से लेकर क्रिस्टल मेज और स्पाइस-2000 बॉम्ब तक खरीदा है। पिछले साल फरवरी में पाकिस्तान के बालाकोट स्थित आतंकवादी अड्डे को तबाह करने के लिए स्पाइस-2000 बॉम्ब का इस्तेमाल ही किया गया था।

अभी इजरायल के साथ भारत के कई रक्षा सौदे पाइपलाइन में हैं। भारतीय वायुसेना दो और फालकॉन अवाक्स की डील करने जा रही है। भारत की रक्षा अधिग्रहण परिषद ने सितम्बर में 'प्रोजेक्ट चीता' की गति तेज करने का फैसला किया। जिसके तहत लेजर गाइडेड बमों से युक्त हेरॉन ड्रोनों, हवा से सतह में मार करने वाले टैंक रोधी मिसाइलों के साथ-साथ दूसरे प्रेसिजन गाइडेड हथियार भी खरीदे जाने हैं।

Happy Diwali

Anup Kumar Jhambani
Director

Industrial Electricals

Authorised Dealer For

Schneider Electric · FLUKE Calibration · Empire CABLES · Unique CABLES · minilec · MKAY POWER CONTROLS · METRAVI THE QUALITY LEADER · ascon · HPL · "JAYKAY" Sirens · HEX An ISO 9001 COMPANY · KAYCEE · COOPER Bussmann · connectwell ...The Right Connection · m-seal · 3M

Shop No. 157-B, Shakti Nagar (In the street Near RSEB-GSS) Udaipur-313 001 (Raj.)
Phone : 0294 - 2422742, 2411879, Mob. : 9829072047
E-mail : info@industrialelectricals.com, Website : www.industrialelectricals.com

आस्था, पवित्रता और साधना का संगम छठ पूजा

✍ विष्णु शर्मा हितैषी

छठ महोत्सव मात्र एक उत्सव न होकर एक तपस्या है। चार दिन तक चलने वाले इस पर्व में व्रती सूर्य नारायण के समक्ष उनकी प्रसन्नता हेतु कठिन व्रत रख, अत्यन्त कठोर नियमों का पालन करते हुए तपश्चर्या करते हैं। यह सृष्टि तप के प्रभाववश ही गतिमान है। रोजाना निश्चित समय पर सूर्य उदित होते हैं और जब उनके अस्त होने का आभास होता है, उस समय वे कहीं ओर दर्शन दे रहे होते हैं, क्योंकि सूर्य ही जगत की आत्मा है। सूर्य के कारण ही सृष्टि फल-फूल रही है। जिन पंच महाभूतों-पृथ्वी, आकाश, वायु, अग्नि और जल से ब्रह्माण्ड की रचना हुई है, उन सबका संचालन भी सूर्य ही करते हैं।

छठ व्रत में सूर्य पूजा के दौरान व्रती अपनी इच्छा प्रकट करते हैं – त्वदीयं वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पये। अर्थात् तुम्हारी दी हुई वस्तुएं तुम्हें ही समर्पित महिलाएं सूर्य को पृथ्वी को जीवंत रखने की प्रार्थना करती हैं – अन्न, धन, लक्ष्मी, हे दीनानाथ, आप हीं के देल। यानी अन्न, धन और लक्ष्मी आप द्वारा ही प्रदत्त हैं। वे परिवार के सदस्यों के लिए संतान, स्वास्थ्य और धन-धान्य मांगते हुए लोक-कल्याण की कामना भी करती हैं।

'अनेकता में एकता' का भाव लिए विभिन्न संस्कृतियों के संगम भारतवर्ष में यूं तो हर त्योहार विशेष होता है, लेकिन लोक-आस्था, पवित्रता और साधना का जो अद्भुत संगम छठपूजा में दिखता है, वह इसे पर्व से महापर्व बना देता है। रीति-नियम में यह पर्व जितना सहज और सरल है, अनुपालन में उतना ही कठिन भी। कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी से प्रारंभ होने वाले चार दिवसीय इस पर्व में तीन दिन तो व्रती को उपवास करना होता है और उसमें भी दो दिन निर्जल रहना होता है। सूर्योपासना का यह पर्व खासतौर पर बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तरप्रदेश और नेपाल के कुछ क्षेत्रों में बड़े ही उल्लास से मनाया जाता है। सूर्य को शक्ति का देवता माना गया है।

अन्दाज़ नहीं बदला

इक्कीसवीं सदी में वक्त बदल गया, जगह बदल गई, लेकिन छठ पूजा नहीं बदली, इसके आयोजन का अन्दाज नहीं बदला। वही बांस की दउरा(टोकरी) और सूप। माटी के हाथी और ठेकुआ का प्रसाद सैकड़ों मील की दूरी तय करने के बाद पूर्वांचल की छठ पूजा परम्परा वहां के गली-चौबारों, खेत-खलिहानों से निकलकर देश के अन्य नगरों-महानगरों तक पहुंच गई लेकिन इसके आयोजन का ठेठ देसी अन्दाज आज भी अपनी मौलिकता के साथ कायम है।

यही तो अपनी जड़ों से जुड़े रहने का आग्रह और अपनी पारम्परिकता की पहचान को कायम रखने की ललक है। इसे पुरबियाई बंधु-बहिनों ने नये जमाने की हवा से बचाए रखा है।

हर वर्ष दीपावली के छठे दिन अर्थात् कार्तिक मास शुक्ल षष्ठी को सूर्य साधना का यह महापर्व छठ पूजा के रूप में प्राचीन काल से ही मनाने की परम्परा अनवरत चली आ रही है।

छठ पूजा वास्तव में सूर्य साधना का श्रेष्ठतम पर्व है। इसकी मान्यता सर्वत्र है, जिसका प्रमाण ऋग्वेद के सूर्य सूक्त में इस प्रकार दिया गया है – 'येना पावक चक्षसा भुरण्यंतम् जनां अनु। त्वं वरुण पश्यसि।' अर्थात् जिस दृष्टि यानी प्रकाश से आप(सूर्य) प्राणियों को धारण-पोषण करने वाले इस लोक को प्रकाशित करते हैं, हम उस प्रकाश की स्तुति करते हैं।

रामराज्य से चली परम्परा

त्रेतायुग में रामराज्य की स्थापना के साथ छठ पूजा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ, इसका उल्लेख प्राचीन धर्म ग्रंथों में पाया जाता है। एक मान्यता के अनुसार लंका विजय के बाद कार्तिक शुक्ल षष्ठी के दिन सूर्यवंशी भगवान श्रीराम और माता सीता ने व्रत रख कर सूर्य देव की आराधना की और सप्तमी को सूर्योदय के समय पुनः अनुष्ठान कर सूर्य देव से आशीर्वाद लिया था। तभी से छठ पूजा का विशेष महत्व हैं। इस व्रत और पूजा की चर्चा विष्णु पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, देवी पुराण आदि प्राचीन धर्म ग्रंथों में विस्तार से की गई है। ऋग्वैदिक काल से सूर्योपासना होती आ रही है। मध्यकाल से छठ पूजा व्यवस्थित रूप से प्रचलन में आई। द्वापर युग के महाभारत काल में कर्ण ने सूर्य देव की पूजा प्रारम्भ की और सूर्य की कृपा से महान योद्धा बने। तभी से अर्घ्यदान की परम्परा स्थापित हुई। इसी कालखंड में पांडवों की पत्नी द्रौपदी ने सूर्य की पूजा अपने प्रियजनों के उत्तम स्वास्थ्य और लम्बी आयु के लिए प्रारम्भ की थी।

छठ व्रत में सूर्य पूजा के दौरान व्रती अपनी इच्छा प्रकट करते हैं - त्वदीयं वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पये। अर्थात् तुम्हारी दी हुई वस्तुएं तुम्हें ही समर्पित। महिलाएं सूर्य से पृथ्वी को जीवंत रखने की प्रार्थना करती हैं - अन्न, धन, लक्ष्मी, हे दीनानाथ, आप हीं के देल। यानी अन्न, धन और लक्ष्मी आप द्वारा ही प्रदत्त है। वे परिवार के सदस्यों व संतान के लिए स्वास्थ्य और धन-धान्य मांगते हुए लोक-कल्याण की कामना भी करती हैं।

वातायन में गूंजते गीत

यह पूरी तरह लोक आस्था का महापर्व है, जिसमें लोक संगीत का भी विशेष स्थान है। पूजा के हर विधान के साथ लोकगीत गाकर छठ देवी को रिझाने की परम्परा है। कांचहि बांस के बहंगिया बहंगी लचकत जाए.... केलवा जे फरेले घवद से उहे पर सुगा मंडराए....., होख न सुरुज देव सहइया बहंगी घाट पहुंचाए..... केलवा के पात पर उगेलन सुरुजदेव.... जैसे गीत लोगों के अंतस में बसे हैं। मान्यता है कि छठ देवी सूर्य की बहिन हैं और उन्ही को प्रसन्न करने के लिए जीवन में सूर्य और जल को सर्वाधिक महत्ता प्रदान करते हुए उनकी पूजा का प्रचलन प्रारंभ हुआ।

त्याग, तपस्या के चार दिन

1. नहाय-खाय

कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को पहला दिन 'नहाय-खाय' होता है। इस दिन सबसे पहले घर की अच्छे से सफाई की जाती है। फिर व्रती स्नान कर पवित्रता के साथ बना शुद्ध भोजन ग्रहण कर व्रत की शुरुआत करते हैं। घर के सभी सदस्य व्रती के भोजन के बाद ही खाना खाते हैं। भोजन के रूप में कद्दू, चने की दाल और चावल ग्रहण किया जाता है।

2. खरना

कार्तिक शुक्ल पंचमी को व्रती दिन भर के उपवास के बाद शाम को भोजन करते हैं। इसे 'खरना' कहते हैं। प्रसाद के रूप में गन्ने के रस या गुड़ में बनी खीर और रोटी बनाई जाती है। इसमें नमक या चीनी का उपयोग नहीं किया जाता।

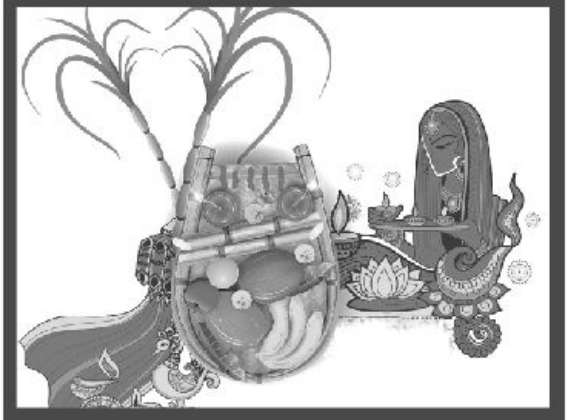

3. अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य

तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को दिन में प्रसाद बनाया जाता है। इसमें ठेकुआ के साथ लड़ुआ(चावल के लड्डू) की विशेषता होती है। नारियल, केला, नींबू के साथ हल्दी, अदरक जैसी दर्जनों चीजें प्रसाद के रूप में जुटाई जाती हैं। इन सबमें गन्ने का अलग ही स्थान है। शाम को पूरी तैयारी कर व्रती परिवार के साथ तालाब-नदी घाट पर पहुंचता है। वहां बांस की टोकरी अथवा सूप में अर्घ्य सजाया जाता है। व्रती कमर भर पानी में खड़ा होकर इरेक टोकरी/सूप और फल आदि अस्तांचल की ओर गमन करते भगवान रवि को अर्पित करता है। गाय के कच्चे दूध या जल से अर्घ्य दिया जाता है।

4. उदीयमान सूर्य को अर्घ्य

चौथे दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी की सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्योदय से पहले ही व्रती के साथ सभी लोग घाटों पर इकट्ठा होते हैं और सूर्य के उदित होने की प्रतीक्षा करते हैं। पूरब में लालिमा के आगमन के साथ सूप और प्रसाद अर्पित करना शुरू हो जाता है। कमर तक पानी में खड़े रहकर भगवान को फिर अर्घ्य दिया जाता है। कार्तिक की कड़कड़ाती ठण्ड भी उनकी आस्था को नमन करती है। प्रसाद खाकर व्रती उपवास पूर्ण करते हैं।

आयकर विवाद का निपटारा
फेसलेस अपील की नई व्यवस्था

गंभीर किस्म की आर्थिक धोखाधड़ी, कालाधन व अंतर्राष्ट्रीय टैक्स आदि के मामले इस व्यवस्था में शामिल नहीं है। संवेदनशील टैक्स मामले की अपील भी इससे संभव नहीं हो पाएगी।

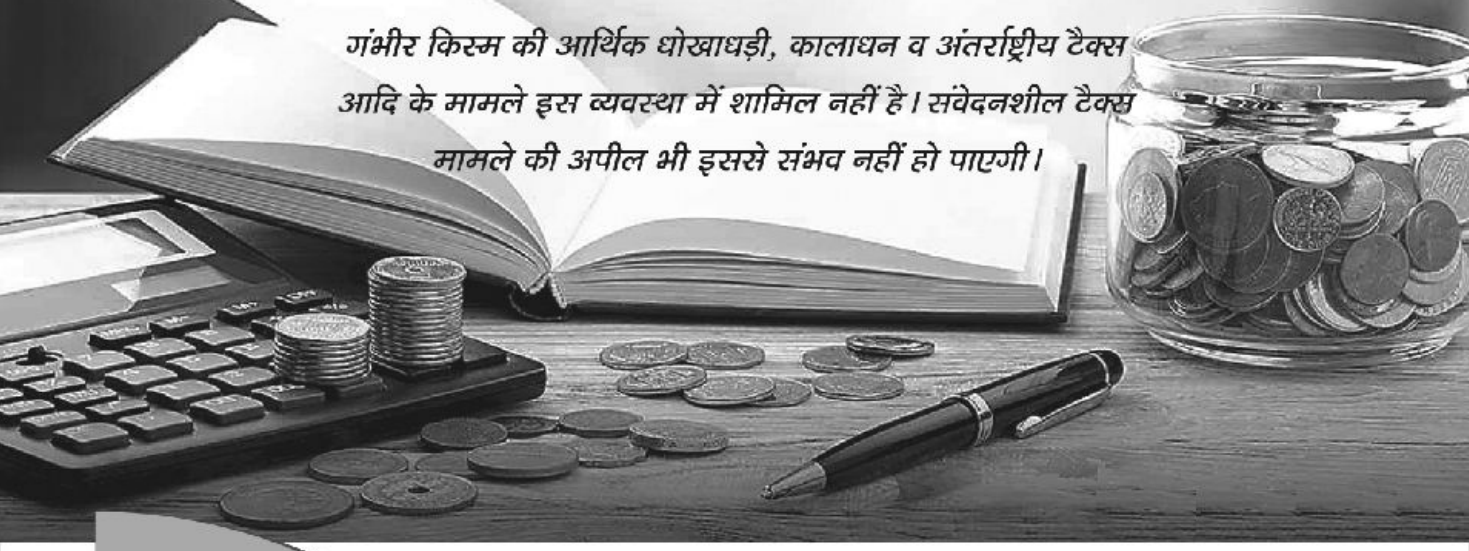

देश में 25 सितम्बर से आयकर मामलों में फेसलेस अपील की व्यवस्था शुरू हो गई है। अब अपील करने और सुनवाई में शामिल होने के लिए करदाता को किसी भी दफ्तर में जाने या किसी अधिकारी के सामने पेश होने की जरूरत नहीं है। इस नई व्यवस्था में टैक्स तय करने में पैदा विवादों की अपील फेसलेस तरीके से करनी संभव हो गई है। इसके जरिए मामलों की सुनवाई किसी भी अधिकारी को रैंडम तरीके से अलॉट कर दी जाएगी जिससे अपील पर निर्णय करने वाले अधिकारियों की पहचान जाहिर नहीं होगी। साथ ही करदाता को अधिकारी के दफ्तर में जाने और हाजिर होने की जरूरत भी खत्म हो गई है। इस नए सिस्टम में सारे कम्यूनिकेशन्स इलेक्ट्रॉनिक तरीके से किए जाएंगे। अपील का फैसला और रिव्यू का काम एक अधिकारी के बजाय टीम किया करेगी। हालांकि, गंभीर फ्रॉड के मामलों, काले धन, अंतर्राष्ट्रीय टैक्स के मामलों को इसमें शामिल नहीं किया गया है। वहीं संवेदनशील टैक्स मामलों की भी अपील संभव नहीं है। ट्रिब्यूनल और हाईकोर्ट में अपील टैक्सपेयर के राज्य में दाखिल होगी।

फेसलेस आकलन की जरूरत

आयकर विवादों के निपटारे की नई व्यवस्था का मकसद टैक्स के मामलों का तेजी से निस्तारण करना है। इसके अलावा करदाता और कर अधिकारी के बीच सम्बंध और सम्पर्क को कम करना है। सरकार का मानना है कि इससे ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में आसानी होगी। नई व्यवथा में गंभीर मामलों को छोड़कर अन्य मामले फेसलेस आकलन से निपटाए जाएंगे।

सभी कर मामलों के निपटारे की तैयारी

सरकार की तैयारी आने वाले समय में सभी तरह के कर मामलों का निपटारा फेसलेस के जरिये करने की तैयारी है। कराधान और अन्य कानून विधेयक, 2020 ने आयकर कानून में कम से कम आठ प्रक्रियाओं को फेसलेस मूल्यांकन योजना का विस्तार करने का प्रस्ताव दिया।

करदाताओं के अधिकारों की सुरक्षा का पुख्ता प्रबंध

सरकार ने फेसलेस असेसमेंट में करदाताओं के अधिकारों को सुरक्षित रखने का पुख्ता प्रबंध किया है। अगर कोई कर अधिकारी पांच लाख रुपये से अधिक आय वाले व्यक्ति से अतिरिक्त टैक्स की मांग करता है तो अंतिम आदेश पारित होने से पहले उसकी समीक्षा की जाएगी।

लगेगा भ्रष्टाचार पर अंकुश

इस व्यवस्था व सुविधा के द्वारा भ्रष्टाचार और मनमानी को रोकने की कोशिश की जाएगी। इसके तहत करदाता की अगर कोई शिकायत हो तो उसकी अपील को रैंडम तरीके से चुने गए अफसर के पास भेजा जाएगा। यह अफसर कौन है, इसके बारे में किसी को जानकारी नहीं होगी। यही नहीं, यह अफसर किसी भी शहर का हो सकता है। आयकरदाता को इसके लिए किसी भी दफ्तर के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं होगी।

✍ शूरवीर सिंह कच्छावा

वर्चुअल किसान पखवाड़े का आयोजन

उदयपुर। बैंक ऑफ बड़ौदा के उदयपुर एवं बांसवाड़ा क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से 13 अक्टूबर को वर्चुअल मेगा किसान मेले का आयोजन किया गया। कार्यकारी निदेशक एस एल जैन, महाप्रबंधक एमवी मुरली कृष्णा, अंचल प्रमुख एमएस मेहनोत, उप प्रमुख योगेश अग्रवाल, उपमहाप्रबंधक नेटवर्क आर सी यादव, प्रदीप कुमार बाफना की मौजूदगी में आयोजन हुआ। शुभारंभ क्षेत्रीय प्रमुख ए के माहेश्वरी, बांसवाड़ा क्षेत्रीय प्रमुख एम के जैन ने किया। किसानों को सम्मानित किया गया। किसान कार्ड, डेयरी ऋण, ट्रेक्टर ऋण के स्वीकृति पत्र व चेक प्रदान किए। 1006 किसानों को 20.50 करोड़ ऋण वितरित भी हुआ। एस सी जाजू ने आभार जताया।

केएस ऑटोमोबाइल्स पर थार की लॉन्चिंग

उदयपुर। के एस ऑटोमोबाइल्स पर महिन्द्रा की आल न्यू थार की लॉन्चिंग विशिष्ट अतिथि महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने की। इस अवसर पर कंपनी के निदेशक सुनिल कुमार परिहार और एमएंडएम के क्षेत्रीय विक्रय प्रबंधक दीपक सिन्हा भी उपस्थित थे। यह गाड़ी 4 बाय 4 पेट्रोल तथा डीजल के वेरिएंट्स में 4 तथा 6 सीटर में उपलब्ध है। जिसमें हार्डटॉप, सॉफ्ट टॉप व कन्वर्टेबल टॉप का विकल्प भी है। कंपनी के निदेशक आकाश परिहार ने बताया कि नई थार में उन्नत किस्म के एमस्टालिन 2.2 लीटर डीजल एवं 2.0 लीटर पेट्रोल इंजन के साथ दो मॉडल्स एएक्स एवं एलएक्स उपलब्ध है। इसके विभिन्न मॉडल्स की एक्सशोरूम कीमत 9.80 लाख से 13.75 लाख रुपए की बीच रखी गई है।

लोकप्रिय हुए जगत मसाला व ड्रायफ्रूट

उदयपुर। आर. के. सर्किल, 80 फीट रोड पर स्वादिष्ट मसालों की विशिष्ट श्रृंखला के साथ जगत स्टोर इन दिनों काफी लोकप्रिय है। कुछ ही समय पूर्व स्थापित इस मसाला व चाय शोरूम पर शुद्ध एवं प्रामाणिक मसालों एवं ड्रायफ्रूट तथा नमकीन की मनपसंद श्रृंखला उपलब्ध है। फर्म स्वामी दीपक माहेश्वरी ने बताया कि मसालों को तैयार करने में स्वाद एवं शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता है। सर्वश्रेष्ठ क्वालिटी के साबुत मसालों को सुखाकर, साफ व छानकर स्वच्छ करने के पश्चात् इन्हें तैयार किया जाता है। यहां साबुत मसालों की मनचाही रेंज व चाय पत्ती वाजिब दामों पर उपलब्ध है।

अलख नयन के चिकित्सा केन्द्रों का लोकार्पण

उदयपुर। विश्व दृष्टि दिवस पर स्टेंडर्ड चार्टर्ड बैंक और ऑपरेशन आईसाइट युनिवर्सल के साथ अलख नयन मन्दिर ने उदयपुर जिले में तीन दृष्टि केन्द्रों की स्थापना की। जो गोगुन्दा, सलूम्बर और वल्लभनगर में हैं। इन विजन केन्द्रों का लोकार्पण मुख्य अतिथि देहात जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान जिला अध्यक्ष लालसिंह झाला ने किया। डॉ. एल. एस. झाला ने बताया कि इन केन्द्रों से जरूरतमंद क्षेत्रों में नेत्र चिकित्सा सेवाओं में विस्तार किया जा सकेगा। इस अवसर पर मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला व मीनाक्षी चूण्डावत भी मौजूद थीं।

भूपेन्द्र बने आरपीएससी चेयरमैन लाठर को सौंपा डीजीपी का जिम्मा

जयपुर। राजस्थान के पूर्व डीजीपी डॉ. भूपेन्द्र सिंह यादव राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के नए चेयरमैन बनाए गए हैं। वहीं, डीजी क्राइम एमएल लाठर को डीजीपी का अतिरिक्त चार्ज दिया गया। यादव ने 14 अक्टूबर को कार्यभार ग्रहण किया। इसी दिन आईएएस दीपक उप्रेती अध्यक्ष पद से रिटायर हुए।

राज्य सरकार ने आरपीएससी में चार नए सदस्य भी बनाए हैं, जिससे अब आयोग में 7 सदस्यों के साथ ही फुल बेंच हो गई है। इन नए सदस्यों में वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव निरंजन आर्य की पत्नी संगीता आर्य, कुमार विश्वास की पत्नी डॉ. मंजू शर्मा, पत्रकार जसवंत राठी और वागड़ के बाबूलाल कटारा शामिल हैं। भूपेन्द्र सिंह चेयरमैन पद पर 31 दिसम्बर 2021 तक सेवाएं देंगे।

डॉ. भूपेन्द्र सिंह यादव

एमएल लाठर

संगीत आर्य

बाबूलाल कटारा

जसवंत राठी

डॉ. मंजू शर्मा

सुख, सम्मान और समृद्धि की कामना का महापर्व

दीपोत्सव पर कामना करें कि सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता का स्वर्णदीप युगों-युगों तक अखण्ड बना रहे। हम ग्रहण कर सकें, नन्हें से दीप की कोमल-सी बाती का गहरा-सा संदेश कि अंधकार को पराजित कर नैतिकता और सौम्य उजास से भर उठना है।

✍ पंकज कुमार शर्मा

हरेक शुभ कार्य के प्रारंभ पर दीप प्रज्वलन की सनातन परम्परा है। दीपक प्रकाश का लघुतम रूप है, तो सूरज प्रकाश का वृहत्तर फैलाव। बाहर फैले तम को मिटाने के लिए रोशनी बिखेरते दीपों की जरूरत होती है, परन्तु अन्तरतम की ज्योति के लिए मन और आत्मा के दीपक की जरूरत होती है। संत कबीर ने मन की बाती को भक्ति और स्नेह (तेल) में भिगो कर ज्योतित करने की बात कही, परन्तु शर्त है कि अन्तरतम का उजियारा तभी संभव होगा, जब मन निःस्वार्थ, निष्कपट और सरल हो। इसीलिए चिंतनशील साधक इस पर्व पर आन्तरिक व बाह्य जगत के लिए अलग-अलग रूपों से दीपमालिका सजाते हैं। अमूमन लोग धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी से सम्पदा की कामना करते हैं। धन्वंतरि भगवान से आरोग्य, गणपति जी से रिद्धि-सिद्धि, यमदेव से दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं। अध्यात्म व भक्ति में रूचि रखने वाले लोग आत्मशांति और भीतरी शक्तियों को सशक्त करने के लिए दीपावली की अंधेरी रात में मन की शांति व संतुष्टि के लिए साधना भी करते हैं। कई दृष्टियों से दीवाली अनूठा त्योहार है, जो अनेक कार्य सिद्ध करता है, इसलिए इसे महापर्व कहा जाता है। पांच दिवसीय महापर्व पर हर व्यक्ति वह सब कुछ पाना चाहता है, जो जीवन के लिए आवश्यक है। तन की जरूरत है अच्छा आरोग्य, मन की आवश्यकता है संस्कारी जीवन दर्शन और धन की स्थायी सम्पन्नता के लिए आवश्यक है, उसकी शुचिता से परिपूर्ण आवक। यानी उसका स्रोत निर्मल हो, जिसमें गंदापन व प्रदूषित तत्व सम्मिलित न हो। तीनों के सम्यक निर्वहन के बिना व्यक्ति का जीवन भर सुखी व सम्पन्न रहना संभव नहीं है।

पैसा बहुत कुछ, पर सब कुछ नहीं

जगत के हर व्यक्ति को भौतिक जीवन निर्वहन के लिए धन की जरूरत होती है। धन के बिना एक-कदम और एक पल भी जीवन चलाना काफी मुश्किल है। फिर चाहे वह गृहस्थ, व्यापारी, नौकरीपेशा, संन्यासी या कोई भी हो। धन का खेल निराला है। इसीलिए लक्ष्मी को महाचंचला कहा गया है। वह आती है, आदमी को शिखर पर चढ़ाती, उसे अच्छी हैसियत देती है। इससे व्यक्ति यह गलतफहमी पाल लेता है कि वह पैसे के बल पर पूरी दुनिया को झुका सकता है। मगर पासा पलटते देर भी नहीं लगती। लक्ष्मीजी की कृपा को संभालना हर किसी के बस की बात भी नहीं है। धैर्यवान, शीलवान, गुणवान व धर्मपरायण व्यक्ति ही इस गुरुतर भार का वहन कर पाते हैं। अन्यथा इन संस्कारों से विमुख व्यक्ति कितना ही धन का ढेर इकट्ठा कर लें, परन्तु वैभव के महल ताश के पत्तों की तरह बिखरने में देर नहीं लगती। परमात्मा धनपतियों को सम्पदा का पुरस्कार देकर सन्मार्ग पर चलने और दीन-दुखियों की मदद की अपेक्षा रखते हैं। सद्बुद्धि और कुबुद्धि दोनों सगी बहनें है। जो सद्बुद्धि का सहारा नहीं लेते, उन पर कुबुद्धि सवार हो जाती है। उसके बाद व्यक्ति अवगुणों के ढलान मार्ग पर फिसलने लगता है और ऐसे महागर्त में गिर पड़ता है, जहां उसकी सहायता के लिए कोई नहीं होता। विचारणीय है कि महालक्ष्मी यह खेल क्यों दिखाती है? अध्यात्म के चिंतक कहते हैं - लक्ष्मी के कई रूप हैं। सम्पन्नता और विपन्नता दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है, जो बारी-बारी व्यक्ति के जीवन में कब आ जाएं, पता नहीं चलता। यह इस बात पर निर्भर है कि साधक ने लक्ष्मी का उपार्जन कैसे किया हैं? बेईमानी और गलत तरीकों से लक्ष्मी का अर्जन तो किया जा सकता है, परन्तु उसके विसर्जन पर राजा से रंक बनने में देर नहीं लगती। अनैतिक तरीके से अर्जित कमाई का किसी भी घर में लम्बे समय तक स्थिर रहना, लगभग असंभव है। कुछ ही समय में ऐसे लोग सम्पदा के उत्कर्ष की बुलंदिया छूने के बाद फिर से श्रीहीन होकर औंधे मुंह पड़े मिलते हैं। यहां वही सनातन सिद्धान्त काम करता है कि पाप से कमाया गया धन, उस व्यक्ति को ही नहीं, अपितु पूरे परिवार को ले डूबता है। इसीलिए तो धन की आवक के लिए शुचिता और स्थायी सम्पदा के लिए समझदारी की जरूरत पड़ती है।

चार मुक्तक

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

छोड़कर चल दिए रस्ते सभी फूलों वाले
चुन लिए अपने लिए पथ भी बबूलों वाले
उनके किरदार की अज़मत है निराली शाहिद
दोस्त तो दोस्त हैं, दुश्मन भी उसूलों वाले।

मख़सूस ये मंज़र

जगमगाते हुए दीपों के इशारे देखो
आज हर सिम्त नज़र डालो, नजारे देखो
परतवे-अर्श का मख़सूस ये मंज़र शाहिद
जैसे उतरे हों फ़लक से ये सितारे देखो।

रोशनी और ख़ुशबू

दीपमाला में मुसर्रत की खनक शामिल है
दीप की लौ में खिले गुल की चमक शामिल है
जश्न में डूबी बहारों का ये तोहफा शाहिद
जगमगाहट में भी फूलों की महक शामिल है।

शुभ दीपावली

आओ अंधकार मिटाने का हुनर सीखें हम
कि वजूद अपना बनाने का हुनर सीखें हम
रोशनी और बढ़े, और उजाला फैले
दीप से दीप जलाने का हुनर सीखें हम।

✍ शाहिद मिर्जा शाहिद

बेहद जरूरी है स्वच्छता व साफ-सफाई

दीपावली महापर्व की तैयारियां काफी अर्से पहले शुरू हो जाती है। औपचारिक शुरुआत धन्वन्तरि त्रयोदशी से होकर भाई दूज पर पूरी होती है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या पर बरसात का मौसम विदा हो चुका होता है। वातावरण और भूमितल पर अस्वच्छता पसरी होती है। ऐसे में साफ-सफाई की विशेष अहमियत है। आरोग्य की दृष्टि से भी स्वच्छता मिशन जरूरी है। क्योंकि जब तन और मन ही स्वस्थ नहीं तो धन का करेंगे भी क्या? वास्तु विज्ञान के अनुसार भी पिछले काफी समय से काम में नहीं आने वाली वस्तुओं का कबाड़ संग्रहण अशुभ माना गया है। इसीलिए इन दिनों आवास की साफ-सफाई बेहद जरूरी है। नई वस्तुओं की खरीददारी, अच्छे कपड़े पहनना, मिठाइयों का उपहार, सुन्दर रंगोली उकेरना, रोशनी फैलाते मिट्टी के दीये, आतिशबाजी इत्यादि वे खुशियां हैं, जो आत्मविश्वास व प्रसन्नता को द्विगुणित कर देते हैं। घर-परिवार, समाज, पड़ौसी के बीच भाईचारा, सद्भाव, प्रेम हो तो आसपास सुखद परिवेश बनेगा, जो शान्ति, समरसता और सुकून देने वाला होगा।

व्यष्टि के साथ समष्टि के हित एकाकार

जैसे-जैसे सभ्यता और तथाकथित विकास के नए पैमाने बनते जा रहे हैं, वैसे-वैसे सामाजिक रिश्तों और धार्मिक समरसता के बंधन ढीले होते जा रहे हैं। त्योहारों को मनाने के पीछे लक्ष्य है देश की एकता, प्रेम, भाईचारा, सौहार्द की भावना जगाना। दीवाली परस्पर सद्भाव और एकता का संदेश देने वाला बड़ा उत्सव है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की संकल्पना ही जीवन को उत्साह से सराबोर कर देती है। समाज व देश की खुशहाली के बिना एकाकी सम्पन्नता किस काम की? दीवाली पर फिजूलखर्ची व प्रदर्शनप्रियता का चहुंओर बोलबाला है। देश में कई ऐसे परिवार हैं, जिन्हें दो जून की रोटी और सिर ढकने को छाया तक नसीब नहीं। ऐसे बेसहारा लोगों की अंधेरी जिन्दगी में आस का एक नन्हा सा दीपक रोशन किया जा सकता है। एक साथ निवास कर रहे सभी लोग व समाज और विभिन्न धर्मावलम्बी मिलकर दीवाली का आनंद लें, यही तो सामाजिकता का मर्म है। आइए! खुशियों के प्रतीक दीपमालिका के पावन पर्व पर शान्ति, समृद्धि, प्रगति, भाईचारे व सहिष्णुता का संकल्प लें। स्वहित से ऊपर उठ कर समाज व देशहित को प्राथमिकता दें। लक्ष्मी नारायण से प्रार्थना करें कि कोरोना की महामारी से विश्व समुदाय को बचाकर जन-जन का कल्याण करें।

उदयपुर के पर्यटन का आकर्षण

मंशापूर्ण करणी माता रोप-वे

सॉई राम एसोसिऐट्स टिकिटसेल एवं मार्केटिंग

श्री कैलाश खण्डेलवाल : अद्वितीय प्रतिभा, कर्मठ एवं कुशल व्यक्तित्व के धनी, इस शख्सियत का जन्म 23 जुलाई, 1970 को श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल के यहां हुआ। इनकी माता प्रेम देवी एवं पत्नी श्रीमती पूनम खण्डेलवाल हैं। एक पुत्र व एक पुत्री हैं। कैलाश जी ने बाल्यावस्था से ही नौकरी न करके पिता की तरह व्यापार करने का संकल्प लिया और अग्रसर हो गये। इनके द्वारा स्थापित कम्पनी मंशापूर्ण करणी माता रोप-वे प्रा.लि. उदयपुर में पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से नींव का पत्थर बनी।

मंशापूर्ण करणी माता रोप-वे दूध तलाई

दूध तलाई और पिछोला झील के ऊपर सूर्य को चूमती अरावली की पहाड़ियों पर राजस्थान का पहला B.O.T. केबल कार-**मंशापूर्ण करणी माता रोप-वे** माछला पहाड़ी पर स्थित है। जहां मंशापूर्ण करणी माता मन्दिर और एकलिंग का किला स्थित है। यह रोप-वे आपको पूरी घाटी के मनोरम दृश्य को निहारने का आनन्द प्रदान करते हुए पूर्व का वेनिस व झीलों की नगरी उदयपुर के शीर्ष स्थल पर ले जाता है। जहां अस्ताचल सूर्य के साथ शहर की प्राकृतिक सुन्दरता को निहारा जा सकता है।

Ticket Prices Rope-way
1. वयस्क : 113 रूपये प्रति टिकिट
2. बच्चें : 65 रूपये प्रति टिकिट

Note : Ticket Price With GST

Ticket Prices Aquarium
1. भारतीय वयस्क : 130 रूपये प्रति टिकिट
2. बच्चें : 65 रूपये प्रति टिकिट

Google Map location link - https://g.page/r/CZieeoY_GCmzEBA

Facebook Link - https://www.facebook.com/karnimata.ropeway

श्री कैलाश खण्डेलवाल की प्रमुख उपलब्धियां एवं पुरस्कार :

1. राजस्थान की प्रमुख महत्वाकांक्षी एवं प्रथम BOT (Built Operate and Transfer) रोप-वे परियोजना का निर्माण एंव संचालन ।
2. रोप-वे परियोजना रिकार्ड 11.5 माह में पूर्ण की।
3. रोप-वे परियोजना को विगत 11 वर्ष से बिना किसी दुर्घटना व रूकावट के सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं।
4. करणीमाता रोप-वे परियोजना में अब तक लगभग 40 लाख से अधिक लोगों को सफलतापूर्वक यात्रा करवा दी गई है।
5. Under The Sun Aquarium का निर्धारित समय 12 माह से पूर्व रिकार्ड 7 माह में कार्य पूर्ण किया।
6. विगत 2 वर्ष से Aquarium का सफल संचालन कर रहे हैं।
7. वर्ष 2012 में प्रमुख मीडिया समूह 'केशव नवनीत' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित।
8. Best innovative project के अन्तर्गत 'समय उद्यमी अवार्ड 2015' श्री कलराज मिश्र, माननीय मंत्री सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित।
9. वर्ष 2018 में Best innovative project हेतु Zee business Dare to dream award से सम्मानित।
10. सर्वश्रेष्ठ नवीन परियोजना के तहत 'केडीएफ कनेक्ट अवार्ड 2019' श्रीमान के.के. पाठक आयुक्त उद्योग विभाग राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित।
11. Federation of Rajasthan Trade and industry (FORTI) के सचिव के पद पर निर्वाचित। (FORTI) सम्पूर्ण राजस्थान के व्यापार और उद्योग की अग्रणी संस्था है जिसमें लगातार दूसरे वर्ष हेतु उद्योग एवं व्यापार से लगभग 10,000 सदस्य है।
12. CII Rajasthan द्वारा गठित startup task force 2019-20 के सदस्य है।

आयु एवं आरोग्य के सम्बंधों को भगवान धन्वन्तरि ने लोकोपकार की भावना के साथ मानव मात्र के लिए आयुर्वेद विज्ञान के रूप में संजोकर दुःख निवारण के प्रयासों को आधार दिया। परवर्तीकाल में इन्हीं सूत्रों एवं सिद्धांतों के प्रयोग-परीक्षण, परिणाम के द्वारा चिकित्सा संहिताओं की रचना हुई। धन्वन्तरि के ज्ञान को उनके शिष्य सुश्रुत ने जिस ग्रंथ में क्रमबद्ध प्रस्तुत किया। वह सुश्रुत संहिता के रूप में हमें आज भी उपलब्ध है।

आयुर्वेद ही अमृत कलश

✍ वैद्य शोभालाल औदिच्य

आदिदेव धन्वन्तरि अष्टांग आयुर्वेद के ज्ञाता थे। समुद्र मंथन के समय 12वें रत्न के रूप में उत्पन्न होने वोले ये विष्णु के अवतार, यज्ञ अंश के अधिकारी, आयुर्वेद प्रवर्तक अमृतकलशधारी एवं देवताओं को जरा एवं व्याधि से मुक्त करने वाले हैं। इन्होंने संसार में शल्य तंत्र को पूर्णत: विकसित किया। संसार में शल्य तन्त्र(सर्जरी) आयुर्वेद की ही देन है।

जड़ी-बूटियां महाकाली की मूल प्रतिष्ठित औषधियों में मानी गई है। तन्त्र शासन में इसका वर्णन है। प्राचीनकाल में तान्त्रिक विभिन्न जड़ी-बूटियों से औषधि बनाने का कार्य कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धनतेरस) से लेकर अमावस्या (दीपावली) की अवधि में करते थे। यह काली पूजन की अवधि है, जो मंत्र और तन्त्रसिद्धि की अवधि है।

तुलसी पूजन, आंवला वृक्ष का पूजन, उसके के नीचे बैठकर भोजन करना, यह सब कार्तिक मास में होता है। जिससे दैहिक, दैविक और भौतिक स्तर पर जीवन स्वस्थ और मन प्रसन्न रहकर उसे प्रकृति की अनुकम्पा मिलती रहे। जीवन संजीवनी और काल की सिद्धी की अधिष्ठात्री महाकाली है। समृद्धि वैभव, भौतिक सम्पन्नता और श्री की अधिष्ठात्री लक्ष्मीजी हैं। इन दोनों के सहयोग से ही जीवन को पूर्णता प्राप्त होती है। इसलिए इस पर्व पर 'धन्वन्तरि जयन्ती' मनाई जाती है। वर्तमान आधुनिक वातावरण में स्वास्थ्य रक्षा के नियम एवं सिद्धांत को छोड़कर हमारा शरीर बीमारियों का घर बनता जा रहा है। रोग निवारण हेतु चिकित्सा और औषधि निश्चय ही आवश्यक है, परन्तु केवल रोगियों की रक्षा के लिए चिकित्सा साधन विपुल बनाने मात्र पर सारी शक्तियां लगा दी जाएं और जो स्वस्थ हैं, उनकी स्वास्थ्य रक्षा पर उचित ध्यान न दिया जाए तो धीरे-धीरे वे भी रोगी होंगे। इस प्रकार रोगियों की संख्या बढ़ती जाएगी और रोगों का अंतहीन क्रम बन जाएगा। इसलिए धनतेरस पर्व को 'स्वास्थ्य दिवस' के रूप में भी मनाएं और तन्दुरुस्ती का महत्व समझें। दवाओं पर आश्रित रहने की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहने के प्रति सुचारू, सम्पन्न, जागरूक और सचेष्ट हों। जीवन में पूर्ण स्वस्थ रहना ही सबसे बड़ी उपलब्धि है।

धनतेरस को लक्ष्मी वृद्धि का प्रतीक मानकर हम बर्तन आभूषण आदि क्रय कर उस सारगर्भित महत्व को भूल गए कि वास्तव में धन क्या है? धन की पूजा का अर्थ क्या है? आयुर्वेद ने स्वस्थ शरीर को ही धन माना है। 'पहला सुख निरोगी काया' और दूजा सुख घर में माया' लक्ष्मीजी को दूसरा दर्जा दिया है। धन-दौलत को जड़ माना है। स्वस्थ शरीर को ही सुख माना है। कोरोना महामारी के चलते आयुर्वेदिक औषधियां एवं नियम आपके बड़े मददगार हो सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में पर्व-उत्सवों का आयोजन आध्यात्मिक संदर्भों के साथ मन एवं शरीर के आरोग्य उपायों के रूप में स्थापित है। काल प्रकर्ष के साथ होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों से स्वास्थ्य रक्षा किस प्रकार की जाए। जिससे मौसम परिवर्तन से होने वाली बीमारियां न हो, इसके उपाय उस काल में आने वाले त्योहारों पर परिवर्तित आहार एवं दिनचर्या परिवर्तन के विधान आयुर्वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप लोक में प्रचलित हुए जो आज तक परम्परागत रूप से व्यवहार में स्थापित हैं।

अखंड सौभाग्य का कामना पर्व करवा चौथ

✍ हितांशी शर्मा

दाम्पत्य जीवन में कोई विघ्न-बाधा न आए, दोनों के बीच समझदारी विकसित हो, इस मंगलकामना के साथ करवा चौथ व्रत मनाया जाता है। यह गणेशजी को समर्पित व्रत भी है, जो दाम्पत्य जीवन में भी सद्बुद्धि प्रदान करते हैं।

धर्मग्रंथों के अनुसार महाभारत काल में श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को पांडवों की रक्षा और विजय हेतु करवाचौथ व्रत का परामर्श दिया था। कहा जाता है कि इसके प्रभाव से महाभारत के युद्ध में पांचों पांडव सुरक्षित रहे और द्रौपदी का सुहाग अखंड बना रहा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चतुर्थी तिथि के स्वामी श्रीगणेश हैं। करवाचौथ का व्रत कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चंद्रोदय-व्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। देखा जाए, तो यह संकटनाशक गणेश चतुर्थी व्रत है। गणेशजी विघ्नेश्वर हैं। दाम्पत्य जीवन तभी सुखी और सफल हो सकता है, जब उसमें कोई विघ्न न आए।

करवाचौथ को कठिन उपवासों में माना जाता है। व्रत की शुरुआत सुबह सूरज उगने से पहले होती है और व्रत रात में चांद निकलने के बाद ही सम्पूर्ण होता है। करवा चौथ से जुड़ी दो कथाएं प्रचलित है। एक कथा यम और सावित्री से जुड़ी हुई है और दूसरी करवा और यम से संबंधित है। दोनों कथाओं के मूल में पतिव्रता पत्नी है, जो अपने तप और व्रत के बल पर अपने पति के प्राण यम के हाथों से छीन कर लाने में सफल होती हैं।

पूजा और परम्परा

करवाचौथ के दिन पूजा और विधियों की शुरुआत सुबह सूरज निकलने से पहले ही शुरू हो जाती है। इस दिन महिलाएं सूर्योदय से पहले जागकर भगवान शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय और चंद्रमा की पूजा करती हैं। पूजा के बाद सास अपनी बहुओं को अल्पाहार देती हैं, जिसे 'सरगी' कहा जाता है। इसके बाद चंद्रोदय के बाद ही महिलाएं कुछ खाती या पीती हैं। शाम का वक्त सजने-संवरने और पूजा की तैयारियों का होता है। उसके बाद शाम की पूजा की जाती है। इस पूजा के लिए महिलाओं को उनकी मां अपने घर से 'बायना' भेजती हैं। यह बायना मुख्य रूप से अपनी सास के लिए होता है। इसमें मिठाई, मेहंदी, फल और साड़ी होती है। सूर्य के अस्त होने से पहले महिलाएं इकट्ठा होकर पूजा स्थल के चारों ओर घेरा बनाकर बैठ जाती हैं और मां पार्वती की पूजा करती हैं। पूजा में करवा चौथ का पारम्परिक गीत गाते वक्त वे बाया को एक-दूसरे के हाथों में बढ़ाती हैं। इसके बाद करवा चौथ की कथा कही जाती है। चांद निकलने पर छलनी से चंद्रमा को देखकर और अर्घ्य चढ़ाने के बाद पति के हाथों पानी पीकर करवाचौथ का व्रत तोड़ा जाता है।

पूजन विधि

'वामन पुराण' में सर्वप्रथम इस व्रत का वर्णन मिलता है। वैसे यह व्रत कठिन है, लेकिन वे महिलाएं, जो किसी भी तरह की व्याधि से पीड़ित हैं, वे भी अपनी शक्ति और सुविधा के अनुसार इस व्रत को कर सकती हैं।

विधि : व्रत के दिन प्रात: स्नानादि के बाद इस संकल्प के साथ करवा चौथ व्रत का आरम्भ करें – ***'मम सुख सौभाग्य पुत्र पौत्रादि सुस्थिर श्री प्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये'।*** दीवार पर गेरू से फलक बना कर पिसे चावलों के घोल से 'करवा' चित्रित करें। इसे 'वर' कहते हैं। पीली मिट्टी से गौरी बनाएं और उनकी गोद में गणेशजी बना कर बिठाएं। गौरी को लकड़ी के आसन पर बिठाएं। चौक बना कर आसन को उस पर रखें। गौरी को चुनरी ओढ़ाएं। सुहाग सामग्री से गौरी का शृंगार करें। जल से भरा हुआ लोटा रखें।

बायना देने के लिए 'करवा' लें। करवा में गेहूं और ढक्कन में शक्कर का बूरा भर दें। उसके ऊपर दक्षिणा रखें। रोली से करवा पर स्वस्तिक बनाएं। गौरी-गणेश और चित्रित 'करवा' की परम्परा अनुसार पूजा करें। पति की दीर्घायु की कामना इस मंत्र से करें – ***'नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संतति शुभम्?' प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे।।*** करवा पर 13 बिंदी रखें और गेहूं या चावल के 13 दाने हाथ में लेकर करवा चौथ की कथा कहें या सुनें। कथा सुनने के बाद करवा पर हाथ घुमा कर अपनी सास के पैर छूकर आशीर्वाद लें और करवा उन्हें दे दें। तेरह दाने गेहूं के और पानी का लोटा या टोंटीदार करवा अलग रख लें। रात्रि में चंद्रमा निकलने के बाद छलनी की ओट से उसे देखें और चंद्रमा को अर्घ्य दें। पति से आशीर्वाद लें। उन्हें भोजन कराएं और स्वयं भी भोजन कर लें। बड़े-बूढ़ों का आशीष भी चरण स्पर्श कर लें।

Happy Diwali

Subhash Mehta
Manish Mehta

0294-2411303
9649229333

Hardware Plaza

Hardware Items, Modular Kitchens and Exclusive Furniture Fittings

17-18, Outside Hathipole, Opp. Swapnalok Cinema, Udaipur (Raj.)
Email : manish_hardwareplaza@yahoo.com

शाहीन बाग जैसे प्रदर्शन गलत

सुप्रीम कोर्ट की दिल्ली पुलिस को भी फटकार

✍ उमेश शर्मा

200
दुकानें बंद प्रदर्शन के कारण

754
एफआईआर के मामले में दर्ज

1400
लोग गिरफ्तार हुए हिंसा के मामले में

शाहीन बाग का फैसला सबक है, जहां सरकारों को सचेत रहना चाहिए, वहीं लोगों-संगठनों को भी एक परिपक्व लोकतंत्र का उदाहरण पेश करना चाहिए।

पिछले साल दिसम्बर में संशोधित नागरिकता कानून के विरोध में दिल्ली के शाहीन बाग में लम्बे समय तक किए गए धरने व प्रदर्शन पर 10 माह बाद आया फैसला आम जन जीवन के लिए स्वागत योग्य है। जस्टिस संजय किशन कौल, अनिरूद्ध बोस और कृष्ण मुरारी की खण्डपीठ ने शाहीन बाग की सड़क को आन्दोलनकारियों द्वारा अवरूद्ध करने को लेकर दायर अधिवक्ता अमित साहनी की याचिका पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 7 अक्टूबर को सुनाए फैसले में कहा कि विरोध प्रदर्शन के लिए सार्वजनिक स्थानों या सड़कों पर कब्जा कर बड़ी संख्या में लोगों को असुविधा में डालने या उनके अधिकारों के हनन की कानून इजाजत नहीं देता। जस्टिस कौल ने फैसले के दौरान कहा कि 'जिस तरह हमारा संविधान हमें विरोध-प्रदर्शन का हक़ देता है, उसी प्रकार सड़क पर आवागमन का अधिकार भी देता है। अदालत सार्वजनिक बैठकों व विरोध-प्रदर्शनों पर रोक तो नहीं लगा सकती, लेकिन ये दोनों ही किसी निर्दिष्ट स्थान पर होने चाहिए। जिससे आम जनता परेशान न हो। असहमति और लोकतंत्र साथ-साथ चलते हैं, पर निर्धारित क्षेत्र या स्थान पर ही प्रदर्शन किया जाना चाहिए।'

उल्लेखनीय है कि शाहीन बाग में करीब सौ दिन तक सीएए के विरोध में तमाम रास्तों को रोके रखा गया था और इस दिन वातावरण भी उग्र होकर हिंसात्मक हो उठा

कब क्या हुआ

- **15 दिसम्बर 2019 :** शाहीनबाग में सीएए के खिलाफ प्रदर्शन शुरू
- **17 जनवरी 2020 :** महिलाओं पर पैसे लेकर प्रदर्शन पर बैठने का आरोप लगाया गया।
- **21 जनवरी :** शाहीन बाग की दबंग दादियां दिल्ली के उपराज्यपाल से मुलाकात करने पहुंची।
- **26 जनवरी :** गणतंत्र दिवस मनाया गया। बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हुए, दादियों ने झंडा फहराया।
- **27 जनवरी :** विधानसभा चुनाव के दौरान गृहमंत्री अमित शाह ने करंट लगने वाला बयान दिया।
- **01 फरवरी :** प्रदर्शन स्थल पर बाइक सवारों ने गोली चलाई।
- **16 फरवरी :** महिला प्रदर्शनकारियों ने गृहमंत्री के घर तक मार्च की तैयारी की, लेकिन पुलिस ने रोका।
- **19 फरवरी :** सुप्रीम कोर्ट के वार्ताकार महिलाओं से बात करने पहुंचे, पर सफल नहीं हुए।
- **24 मार्च :** लॉकडाउन लागू होने के बाद धरनास्थल खाली हुआ।

था। इस फैसले से तत्कालीन प्रशासनिक एजेन्सियों को भी साफ-साफ बता दिया गया कि उन्होंने अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह ठीक से नहीं किया। फैसले में कहा गया कि दिल्ली पुलिस जैसे प्राधिकारियों को शाहीन बाग इलाके को प्रदर्शनकारियों से खाली कराने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए थी। वे ऐसी स्थिति से निपटने के लिए अदालतों की पनाह नहीं ले सकते। न ही अदालत के कंधे पर बंदूक रखकर फायर कर सकते हैं। साहनी की याचिका पर शीर्ष अदालत ने 21 सितम्बर को सुनवाई पूरी की थी। उन्होंने कालिन्दी कुंज-शाहीन बाग खण्ड पर यातायात सुगम बनाने का दिल्ली पुलिस को निर्देश देने के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी।

उच्च न्यायालय ने स्थानीय प्राधिकारियों को कानून व्यवस्था की स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस स्थिति से निबटने का निर्देश दिया था। इसके बाद, साहनी ने शीर्ष अदालत में याचिका दायर की थी। साहनी ने कहा कि व्यापक जनहित को ध्यान में रखते हुए विरोध प्रदर्शनों की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा, इसे 100 दिन से भी ज्यादा दिन तक चलने दिया गया और लोगों को इससे बहुत तकलीफें हुईं। इस तरह की घटना नहीं होनी चाहिए।

यह बात जगजाहिर है कि शाहीन बाग में हुए प्रदर्शन से जो आर्थिक और सामाजिक क्षति पहुंची है, उसका आकलन तो मुश्किल है ही, भरपाई भी संभव नहीं है। नागरिकता संशोधन कानून(सीएए), एनआरसी और एनपीआर के विरोध में जब शाहीन बाग में प्रदर्शन हो रहा था, तब देश में माहौल काफी गरम था। इसके पक्ष व विपक्ष में समाज बंटा हुआ था। प्रशासन जब मजबूर हो गया, प्रदर्शनकारियों को हटाने की कोशिशें जब नाकाम हो गई थीं, तब सुप्रीम कोर्ट ने समाधान निकालने के लिए मध्यस्थों को भेजा था। कुछ देर की बातचीत के बावजूद प्रदर्शनकारी मध्यस्थों की बात मानने को तैयार नहीं हुए। तब सुप्रीम कोर्ट की ओर से कोशिश हुई थी कि धरना कहीं और स्थानांतरित हो जाए और शाहीन बाग की बाधित सड़क खुल जाए। सुप्रीम कोर्ट की वह कोशिश भी नाकाम हो गई थी, पर तब तक कोरोनो का कहर टूटा और धरने को 24 मार्च को लॉकडाउन की शुरुआत में हटा दिया गया।

इसमें कोई संदेह नहीं, सड़कों का उपयोग प्रदर्शन के लिए करने से आमजन जीवन को परेशानी होती है और लोगों के अधिकारों का हनन होता है। जहां हमें विरोध-प्रदर्शन का अधिकार है, वहीं सड़क और सार्वजनिक जगहों के निर्बाध इस्तेमाल का भी अधिकार है। अव्वल तो लोगों को विरोध-प्रदर्शन से लोकतांत्रिक ढंग से रोकना-समझना शासन-प्रशासन का काम है, वहीं होने वाले प्रदर्शन से दूसरे लोगों की रक्षा करना भी उसका दायित्व है। शासन-प्रशासन को अपने स्तर पर ही ऐसे प्रदर्शनों का सही समाधान खोजना चाहिए। गौर करने की बात है, जब सरकार धरना को कहीं और स्थानांतरित करने या खत्म करने में नाकाम रही, तब सड़क खुलवाने के लिए अदालत में याचिका दायर करने की जरूरत पड़ी। यह जरूरत नहीं पड़नी चाहिए थी। अदालत को ऐसे मामलों को सुलझाने में वक्त लगता है, क्योंकि कानूनी प्रावधान के तहत सबका पक्ष सुनने के बाद ही कोई फैसला संभव होता है।

खैर, अब सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देश के बाद सरकारों को ज्यादा सचेत रहना चाहिए। धरना-प्रदर्शन के प्रति ज्यादा संवेदनशील होने की जरूरत है। समय से पहले ही समस्या की सुनवाई करने में ही भलाई है।

Dheeraj Doshi

Happy Diwali

MEMBER
Hotel Association,
Udaipur

Hotel
Darshan Palace

UIT Circle, Saheli Marg, Udaipur 313001 (Raj.)
Phone : (0294) 2425679, 2427364, E-mail : dhiru58364@rediffmail.com
website: www.hoteldarshanpalaceudaipur.com

28 साल बाद सीबीआई कोर्ट का फैसला

सबूतों के अभाव में बरी हुए आरोपी

- ढांचे का विध्वंस पूर्व नियोजित नहीं था।
- अभियुक्तों के खिलाफ पुख्ता सबूत नहीं।
- ऑडियो-वीडियो से प्रामाणिकता साबित नहीं की जा सकी।

बरी होने के पांच आधार

- असामाजिक तत्वों ने ढांचा गिराया, उन्हें रोकने की कोशिश की गई।
- सबूत के तौर पर पेश भाषणों की रिकॉर्डिंग भी साफ नहीं।

सवाल फिर भी खड़ा है किसने गिराया बाबरी ढांचा?

✍ भगवान प्रसाद गौड़

अयोध्या में 6 दिसम्बर 1992 को विवादित बाबरी ढांचे के विध्वंस मामले को लेकर 28 साल बाद 30 सितम्बर को 2300 पृष्ठों में आया सीबीआई स्पेशल कोर्ट का फैसला महत्वपूर्ण होने के साथ विचारणीय भी है। कोर्ट ने घटना को पूर्व नियोजित नहीं माना और जिन्हें इस ढांचे के विध्वंस के लिए आरोपी बनाया गया था, उन सभी को बरी कर दिया। जिनमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, साध्वी उमा भारती, महन्त नृत्य गोपाल दास, पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह भी शामिल हैं। इस मामले में कुल 49 अभियुक्तों के खिलाफ सीबीआई ने चार्जशीट दाखिल की थी, जिनमें से अशोक सिंघल, आचार्य गिरिराज किशोर, विष्णु हरि डालमिया सहित 17 लोगों की मौत हो चुकी है। विवादित स्थल पर बनाए गए अस्थायी राम मंदिर के मुकदमे के आधार पर पुलिस ने 8 दिसम्बर 1992 को शांति-व्यवस्था की दृष्टि से आडवाणी व अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर ललितपुर में माताटीला बांध के गेस्टहाउस में रखा था। मामले की जांच उत्तरप्रदेश सीआईडी की अपराध शाखा ने की। जिसने फरवरी 1993 में आठों अभियुक्तों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी। मुकदमे की ट्रायल के लिए ललितपुर में विशेष अदालत स्थापित की गई। बाद में अदालत को आवागमन सुविधा दृष्टि से रायबरेली स्थानान्तरित कर दिया गया।

पत्रकारों पर हमले के मामले : इन मामलों के अलावा पत्रकारों और फोटोग्राफरों से मारपीट, कैमरा तोड़ने और छीनने आदि के 47 मुकदमे अलग से कायम कराए। ये मामले लखनऊ सीबीआई कोर्ट से जुड़े रहे।

सरकार ने बाद में सभी केस सीबीआई को जांच के लिए दे दिए। सीबीआई ने रायबरेली में चल रहे केस नंबर 198 की दोबारा जांच की अनुमति अदालत से ली। प्रदेश सरकार ने 9 सितम्बर 1993 को नियमानुसार हाईकोर्ट के परामर्श से 48 मुकदमों की सुनवाई को लखनऊ में विशेष अदालत के गठन की अधिसूचना जारी की। लेकिन इस अधिसूचना में केस नम्बर 198 शामिल नहीं था, जिसका ट्रायल रायबरेली में चल रहा था। राज्य सरकार ने 8 अक्तूबर 1993 को संशोधित अधिसूचना जारी कर केस नंबर 198 को लखनऊ स्पेशल कोर्ट के क्षेत्राधिकार में जोड़ दिया। लेकिन हाईकोर्ट से परामर्श नहीं किया। बाद में आडवाणी और अन्य अभियुक्तों ने तकनीकी त्रुटि का लाभ हाईकोर्ट में लिया।

आखिरी फैसला : सीबीआई की विशेष कोर्ट के जज एस के यादव के सेवाकाल का यह अन्तिम फैसला था। इस महत्वपूर्ण फैसले के बाद वे सेवानिवृत्त हो गए। जिस समय फैसला सुनाया गया, छब्बीस अभियुक्त कोर्ट में मौजूद थे।

जबकि आडवाणी, जोशी, उमा भारती, महंत नृत्यगोपालदास समेत 6 आरोपी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कोर्ट में जुड़े हुए थे। विशेष जज के फैसले में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि सीबीआई अकाट्य साक्ष्य पेश करने में विफल रही। पेश किए गए फोटो, वीडियो, फोटोकॉपी साक्ष्य रूप में ग्राह्य नहीं है। घटना न पूर्व नियोजित थी और न इसके लिए कोई षड़यंत्र किया गया। तस्वीरों के आधार पर किसी को आरोपित नहीं ठहराया जा सकता। अदालत ने पेश साक्ष्यों को फर्जी बताया। अदालत ने अपने निर्णय में तत्कालीन आईजी सीआरपीएफ सतीश चंद्र चौबे का बयान भी उद्धृत किया है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। निर्णय में कहा गया कि पीडब्ल्यू 259 के तौर पर पेश हुए इस गवाह ने स्वीकार किया है कि कारसेवकों के भेष में असामाजिक तत्वों व आतंकवादियों का प्रवेश हो गया था जिससे विवादित ढांचे को नुकसान पहुंचा। उपरोक्त बयान की पुष्टि एलआईयू रिपोर्ट से होती है।

इससे सीबीआई जैसी जांच एजेंसी फिर से प्रश्न चिन्ह के दायरे में खड़ी हो गई है। वह ऐसा कोई सबूत नहीं दे सकी, जिससे साबित हो सके कि वे ढांचे को तोड़ने अथवा भीड़ को उकासाने में शामिल थे। जबकि इस बात के प्रमाण मिले कि वे उन्मादी भीड़ को काबू में रखने की भरसक कोशिश कर रहे थे। अब सवाल यह उठता है कि फिर 'बाबरी का ढांचा' ध्वस्त कैसे हुआ ? कोई तो इसके दोषी रहे ही होंगे ? अपने आप तो वह नहीं गिर पड़ा। सवाल सही हो सकते हैं, लेकिन जब साक्ष्य ही कमजोर थे तो अदालत कैसे किसी को दोषी ठहराती। तोड़ने वालों के वजूद को महज भीड़ या अराजक तत्व बताकर आगे बढ़ जाने के अपने नफा-नुकसान हैं, जिनसे हमारी समग्र व्यवस्था पर उत्तरोत्तर असर हो तो आश्चर्य नहीं।

लक्ष्मण रेखा खींचे

अदालत के फैसले को स्वीकारते हुए अब भारतीय समाज को अपनी सम्पूर्णता में आस्था और अपराध की लक्ष्मण रेखाओं को सुनिश्चित कर लेना चाहिए। हमें एक सजग लोकतांत्रिक समाज के रूप में सावधानी बरतनी चाहिए ताकि भविष्य में व्यवस्थाओं का संचालन कोई अराजक भीड़ न कर सके। हमारे धार्मिक-राजनैतिक नेताओं व शासन-प्रशासन तंत्र को यह सुनिश्चित करना होगा कि समाज में सद्भाव की कड़ियां कमजोर न होने पाएं। अतीत की भूलें और गलतियों का बोझ ज्यादा समय तक नहीं ढोया जा सकता।

फैसला गलत : जिलानी

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य जफरयाब जिलानी ने सीबीआई विशेष अदालत के फैसले को गलत ठहराते हुए कहा है कि पीड़ित इसके खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपील करेंगे। हम सीबीआई कोर्ट के फैसले से इत्तेफाक नहीं रखते। इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी और पीड़ित हाजी महबूब और हाजी इकलाख की तरफ से हमने एक प्रार्थनापत्र न्यायालय को दिया था।

ये दोनों अयोध्या के रहने वाले हैं। इस घटना में इनके मकान जले थे और दोनों इस मुकदमे में गवाह भी हैं। अभी यह दो नाम हमारे पास है और अगर जरूरत पड़ी तो पर्सनल ला बोर्ड अथवा बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी भी इस मामले को चुनौती देगी। क्योंकि मस्जिद गिराई गई।

ये 32 आरोपी हुए बरी

सीबीआई कोर्ट ने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, कल्याण सिंह, उमा भारती, विनय कटियार, साध्वी ऋतंभरा, महंत नृत्य गोपाल दास, डॉ. राम विलास वेदांती, चंपत राय, महंत धर्मदास, सतीश प्रधान, पवन कुमार पांडेय, लल्लू सिंह, प्रकाश शर्मा, विजय बहादुर सिंह, संतोष दुबे, गांधी यादव, रामजी गुप्ता, ब्रज भूषण शरण सिंह, कमलेश त्रिपाठी, रामचंद्र खत्री, जय भगवान गोयल, ओम प्रकाश पांडेय, अमर नाथ गोयल, जयभान सिंह पवैया, महाराज स्वामी साक्षी, विनय कुमार राय, नवीन भाई शुक्ला, आर एन श्रीवास्तव, आचार्य धर्मेन्द्र देव, सुधीर कुमार कक्कड़ और धर्मेन्द्र सिंह गुर्जर को बरी करार दिया है।

49 में 17 लोगों की हो चुकी है मौत

बाबरी विध्वंस मामले में कुल 49 आरोपी थे, जिसमें से 17 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें अशोक सिंघल, गिरिराज किशोर, विष्णु हरि डालमिया, मोरेश्वर सावे, महंत अवैद्यनाथ, महामंडलेश्वर जगदीश मुनि महाराज, बैकुंठ लाल शर्मा, परमहंस रामचंद्र दास, डॉ. सतीश नागर, बालासाहेब ठाकरे, तत्कालीन एसएसपी डीबी राय, रमेश प्रताप सिंह, महात्यागी हरगोविन्द सिंह, लक्ष्मी नारायण दास, राम नारायण दास और विनोद कुमार बंसल शामिल हैं।

अहम मामले

केस नंबर 197

छह दिसम्बर, 1992 को अयोध्या में विवादित ढांचा पूरी तरह ध्वस्त होने के बाद राम जन्मभूमि, अयोध्या के थाना प्रभारी पी एन शुक्ल ने शाम पांच बजकर 15 मिनट पर लाखों अज्ञात कार सेवकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा कायम किया। इसमें बाबरी मस्जिद गिराने का षड्यंत्र, मारपीट और डकैती शामिल है।

केस नंबर 198

6 दिसम्बर 1992 को ढांचा विध्वंस के लगभग 10 मिनट बाद एक पुलिस अधिकारी गंगा प्रसाद तिवारी ने आठ लोगों पर मुकदमा कायम कराया। उन पर राम कथाकुंज सभा मंच से धार्मिक उन्माद भड़काने वाला भाषण देकर ढांचा गिरवाने का आरोप लगाया। इसमें अशोक सिंघल, गिरिराज किशोर, लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, विष्णु हरि डालमिया, विनय कटियार, उमा भारती और साध्वी ऋतुंभरा नामजद आरोपी बनाए गए। आईपीसी की धारा 153ए 153बी, 505, 147 और 149 के तहत यह मुकदमा रायबरेली में चला। बाद में इसे लखनऊ सीबीआई कोर्ट में चल रहे मुकदमे में शामिल कर लिया गया।

संतोष : हमेशा कोर्ट को माना, आज भी मानेंगे : इकबाल

फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए बाबरी मस्जिद के मुद्दई मरहूम हाशिम अंसारी के पुत्र इकबाल अंसारी ने कहा कि हमने हमेशा कोर्ट के फैसले का सम्मान किया और आज भी करते हैं। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के साथ ही मुद्दा खत्म हो गया था। कोर्ट सबूतों के आधार पर चलती है, लेकिन जांच एजेंसी जब सबूत ही नहीं जुटा पाई तो कोर्ट को यही फैसला देना था। भाईचारे के लिए विवाद खत्म मान लेना चाहिए और सभी को तरक्की के रास्ते पर बढ़ना चाहिए।

असंतोष : हाईकोर्ट में देंगे चुनौती : हाजी महबूब

फैसले पर असंतोष व्यक्त करते हुए बाबरी मस्जिद के पैरोकार हाजी महबूब ने कहा कि हम हाईकोर्ट में फैसले को चुनौती देंगे। सबूत न होने की बात कोर्ट की ओर से कहा जाना ताज्जुब पैदा करता है। घटना के बाद भी कई नेता चीख-चीख कर दुहाई दे रहे थे। फिर भी सीबीआई को सबूत न मिलना बताता है कि क्या हुआ। मैं निःशब्द हूं इसलिए कुछ नहीं कहूंगा।

शौक भी, सेहत भी
घर में उगाएं पौष्टिक हरी सब्जियां

✍ हर्षिता नागदा

किचन गार्डन यानी बागवानी का ऐसा स्वरूप जिसमें घर की चारदिवारी के अंदर साग-सब्जियां उगायी जाती हैं। कहा जा सकता है कि शहरों की घनी आबादी के बीच घरों में किचन गार्डन लायक जगह बची ही कहां है। यह बात काफी हद तक सही है। शहरों में खाली जगह की बड़ी कमी है। फिर भी कुछ लोगों के पास तो घर के अंदर किचन गार्डन के लिए दो-चार गज या इससे अधिक खाली जमीन पड़ी ही होगी। ऐसे लोग इस जमीन पर क्यारियों में अपने एवं पूरे परिवार के लिए कई तरह की ताजी एवं स्वास्थ्यवर्धक साग-सब्जियां उगा सकते हैं।

जिन लोगों के घरों में किचन गार्डन के लिए पर्याप्त जगह नहीं है उन्हें भी मायूस होने की जरूरत नहीं है। वे छत पर गमलों, लकड़ी के बक्सों, पेटियों, पालीथिन इत्यादि में सब्जियां उगा सकते हैं। इन तमाम जगहों पर भी ठीक ऐसी ही सब्जियां उगायी जा सकती हैं जैसी जमीन पर बनायी गयी क्यारियों में। इतना जरूर है कि जमीन की बजाय दूसरी जगहों पर सब्जियों को उगाने के लिए ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है।

शहरों में ताजी सब्जियां खाने के लिए इतना कष्ट तो उठाना ही होगा। सवाल उठता है कि किचन गार्डन में कौन-कौन सी सब्जियां उगायी जा सकती हैं। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि किचन गार्डन में किस मौसम में कौन सी सब्जियां उगाएं? सबसे पहले बात करते हैं सर्दी के मौसम की। सर्दी के मौसम ने दस्तक दे भी दी है। यह मौसम हरी सब्जियों के मामले में धनी माना जाता है। इसमें पालक, सरसों, मेथी, बथुआ, मूली, शलजम, गाजर, चुकंदर, शिमला मिर्च, बंदगोभी, फूल गोभी, लौकी, तोरई, मटर, अदरक, लहसुन, आलू आदि सब्जियां उगायी जा सकती हैं। ये तमाम सब्जियां पौष्टिकता के गुणों से लबालब हैं। यही नहीं, स्वाद में भी ये लाजवाब हैं। इनमें विटामिन्स भरपूर मात्रा में होते हैं। सर्दी के मौसम की तरह ही गर्मी

में भी किचन गार्डन में कई तरह की सब्जियां उगायी जा सकती हैं। जिनमें करेला, भिंडी, तोरई, लौकी, ककड़ी, खीरा, टिंडा, आदि प्रमुख हैं। इनमें करेला एवं भिंडी को पौष्टिकता एवं स्वाद के मामले में शीर्ष पर रखा जा सकता है।

बरसात के मौसम में खीरा, भिंडी, लौकी, अरबी, टमाटर, टिंडे, हरी मिर्च आदि सब्जियों के साथ अलग से हरा धनिया व पुदीना भी पैदा किया जा सकता है। सर्वविदित है कि ये तमाम चीजें खाने की लज्जत बढ़ाने एवं खाने को स्वास्थ्यवर्द्धक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सर्दी की सब्जियां फरवरी-मार्च में उगायी जाती हैं। बरसात की सब्जियां उगाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय जून-जुलाई महीने का है। यहां यह महत्वपूर्ण है कि अलग-अलग मौसम में उगायी जाने वाली सब्जियों के लिए अलग मिट्टी या खाद एवं दवाई वगैरह की आवश्यकता नहीं पड़ती। सामान्यतया एक ही तरह की मिट्टी हर मौसम में सब्जियां उगाने के लिए उपयुक्त होती हैं।

कैसे उगाएं : सब्जियां उगाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त दोमट मिट्टी को माना जाता है। सब्जियों की बुवाई से पहले मिट्टी को भुरभुरी बना उसमें सड़ी गोबर एवं खली की खाद अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद सब्जियों की उन्नत किस्म के बीज बो दें। बीज दो-तीन इंच से ज्यादा गहरे नहीं जाने चाहिए। मिट्टी में नमी बनाये रखें। कुछ सब्जियां ऐसी होती हैं, जिन्हें उगाने के लिए पहले पौध तैयार की जाती है। पहले एक छोटी क्यारी में पौध तैयारी करें।

पौध किसी अच्छी नर्सरी से भी प्राप्त की जा सकती है। सावधानीपूर्वक तैयार की गयी मिट्टी में पौध की रोपाई कर दें। रोपाईकरते वक्त यह ध्यान रखें कि पौधे की जड़ को नुकसान न पहुंचे। रोपाई करते ही सिंचाई कर दें और पौधे के जड़ पकड़ने तक मिट्टी में नमी बनाये रखें।

Madanlal Chaanra
#92144 53304

Happy Diwali

MOTOROLA
Dealers : 2-Way Radios

Mobile Communications
WIRELESS ENGINEERS (Free Warranty Services)

243/17, "Nundee", Ashok Nagar, (Maya Misthan)
Opp. Vigyan Samiti, UDAIPUR-313001 (Raj.)
Ph. : 0294-2420455 E-mail : mobcom@gmail.com

Ministry of Communicaions & IT Lic. No. AJR/DPL/04/2000
PAN# : ADJPC3852C TIN #08164003800

नि:शुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

दिवाली की
हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में नि:शुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

HAPPY DEEPAVALI

LAXMI ENGINEERING WORKS

FEW OF OUR OTHER PRODUCT

✦ Jaw Crusher ✦ Bucket Elevator ✦ Belt Conveyor ✦ 3,4 Roller Mill
✦ Hammer Mill ✦ Ball Mill ✦ Whizzer Classifier ✦ Screw Conveyor
✦ Microzine Plant for 15 & 20 ✦ Microns ✦ Material Handling Equipments

OUR SPECIALTY : CUSTOM BUILT PLANTS & MACHINERY

E- 176, Road No. 5, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur - 313003 Tel. : 0294-2490060, 2490735
E-mail : info@laxmiengineering.com | govind@laxmiengineeering.com Website : www.laxmiengineering.com

ऋतिक ने पूरे किए बॉलीवुड में दो दशक

10 जनवरी 1974 में जन्मे ऋतिक को साल 14 जनवरी, 2000 में फिल्म 'कहो ना प्यार है' के साथ अपने कॅरियर की शुरूआत से अब तक डान्स के लिए सराहना मिलती रही है। उनकी फिल्मों में उनके डान्स को लेकर हमेशा से ही एक अलग आकर्षण रहा है। पिछले वर्ष नवम्बर में आई फिल्म 'वॉर' का गीत 'घुंघरू' काफी पसन्द किया गया। फिल्म 'वॉर' से पहले ऋतिक की 'काबिल' और 'सुपर 30' फिल्में रिलीज हुई। इन दोनों ही फिल्मों में कोई ऐसा गीत नहीं था, जिसमें ऋतिक को देखते हुए विशेष कोरियोग्राफी की गई हो। वे कहते हैं, 'अगर आप बदले हुए दौर के हिसाब से सोचें, तो आपको भी यही लगेगा कि क्या किसी एक्टर को हर फिल्म में सिर्फ इसलिए डान्स करना चाहिए, क्योंकि वह अच्छा डान्सर है। 'काबिल' और 'सुपर 30' जैसी फिल्मों में इस बात की कोई जरूरत नहीं थी।

अभिनेता ऋतिक रोशन की किसी फिल्म की घोषणा होती है तो उनके फैन्स खुद-ब-खुद यह मान लेते हैं कि इसमें उनका कम से कम कोई धमाकेदार डांस तो होगा ही। पर ऐसा उनकी हर फिल्म में नहीं होता। इस बारे में ऋतिक का कहना है कि 'फिल्मों को लेकर दर्शकों की पसंद अब बदल चुकी है। समाज तेजी से बदल रहा है और फिल्में भी समाज का आईना ही तो हैं। फिल्म में किसी एक्टर का डान्स मात्र इसलिए ज़रूरी कैसे होना चाहिए क्योंकि वह एक अच्छा डान्सर है।'

चलिए, अब बात करते हैं उनकी अगली फिल्म की। फिल्म 'कृष-4' को लेकर चर्चा थी कि ऋतिक रोशन की इस फिल्म की शूटिंग इस साल उनके जन्मदिन के बाद से शुरू हो जाएगी, लेकिन कोरोना वायरस के कारण लगे ताले ने फिल्म के काम पर भी कुछ समय के लिए 'ताला' लगा दिया, हालांकि फिल्म की स्क्रिप्ट तैयार है। इस श्रृंखला की आखिरी फिल्म(कृष-3) 2013 में रिलीज हुई थी, जिसमें कंगना रानौत, विवेक ओबेराय और प्रियंका चोपड़ा जैसे नामी सितारे थे। 'कृष' की चौथी किस्त के निर्माता-निर्देशक भी पूर्व की ही तरह ऋतिक के पिता राकेश रोशन ही होंगे, जो एक ज़माने में लोकप्रिय स्टार थे। फिलहाल फिल्म की कास्ट पर विचार चल रहा है और जनवरी 2021 में फिल्म के फ्लोर पर आने की प्रबल संभावना है।

'कोरोना' की बात हुई तो बताते चलें कि इस वायरस ने गतिमान दुनिया का पहिया जाम कर दिया। कई व्यवसायों सहित बॉलीवुड-टॉलीवुड ने भी लॉकडाउन की भारी मार झेली, जिससे अभी भी वह संभल नहीं पाया है। ऐसे कठिन दौर में ऋतिक रोशन बॉलीवुड के उन डान्सर्स की मदद के लिए आगे आए, जो स्टूडियोज़ पर लटके तालों के कारण मायूस होकर घर बैठे थे और सामने रोजी-रोटी का बड़ा संकट था।

इसी नवम्बर माह में 46वें वर्ष में प्रवेश करने वाले ऋतिक 'कहो ना प्यार है', 'धूम-2', 'लक्ष्य' और ज़िन्दगी न मिलेगी दोबारा जैसी फिल्मों में अपने डान्स को लेकर जाने जाते हैं। ऋतिक अपने करियर के शानदार मुकाम पर हैं। इस साल उन्हें इण्डस्ट्री में दो दशक पूरे हो जाएंगे।

ऋतिक ने ऐसे 100 से अधिक डान्सरों के खातों में पैसा जमा किया। ये वे डान्सर थे जिनके साथ वे अतीत में कहीं न कहीं अभिनय अथवा डान्स परफॉर्म कर चुके थे। डान्सर कॉर्डिनेटर राज सुरानी के अनुसार ऋतिक ने इन कलाकारों की ऐसे कठिन समय में मदद की जब उनके लिए घर का किराया चुकाना तो दूर गांव लौटने तक के लिए पैसा नहीं था। उन्होंने हर ज़रूरतमंद की मदद की चाहे भोजन मुहैया करवाना हो या एन 95एफएफपी-3 मास्क का वितरण हो।

✍ दुर्गाशंकर मेनारिया

इसमें कोई दो राय नहीं कि ऋतिक बहुत अच्छे डान्सर हैं। उन्होंने बाकायदा नृत्य प्रशिक्षण लेते हुए पसीना बहाया है। किन्तु उनका मानना है कि उनकी हर फिल्म में 'डान्स' हो ही, यह अब ज़रूरी नहीं।

20 मिनट में बनेंगी ये स्वीट डिश

आप घर में मिठाई बनाने से क्यों हिचकती हैं? इसमें ज्यादा वक्त लगता है, इसलिए न! तो इस दिवाली मिठाई बनाने से आपको घबराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हम आपके लिए लेकर आए हैं, झटपट बनने वाली स्वीट डिश की रेसिपी, बता रही हैं - **रेणु शर्मा**

खजूर के लड्डू

सामग्री : खजूर-12, मेवे-1 कप, घी-1 चम्मच, कद्दूकस किया नारियल-आधा कप

विधि : खजूर के बीज निकालकर दरदरा पेस्ट बना लें। मेवों को सूखा भून लें और ग्राइंडर में डालकर दरदरा पीस लें। नॉनस्टिक पैन में घी गर्म करें और खजूर को लगभग तीन से चार मिनट तक भूनें। अब मेवों के मिश्रण को भी पैन में डालें और कुछ देर भूनें। गैस ऑफ कर दें। मिश्रण को लगातार मिलाएं, इससे वो आपस में चिपकने लगेंगे। जब मिश्रण हल्का ठंडा हो जाए तो उससे छोटे-छोटे लड्डू बनाएं और उन्हें कद्दूकस किए नारियल में रोल करें। ठंडा होने पर सर्व करें।

पनीर खीर

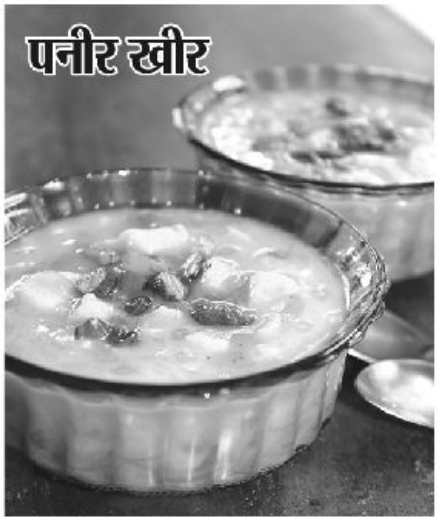

सामग्री : पनीर-तीन चौथाई कप, दूध-2 कप, मीठा कंडेस्ड मिल्क-एक चौथाई कप, इलायची पाउडर-1 चम्मच, चीनी-आधा चम्मच, केसर-चुटकी भर, बारीक कटा पिस्ता-2 चम्मच।

विधि : एक पैन में दूध डालें और उबालें। आंच धीमी करें और उसमें कंडेस्ड मिल्क डालकर मिलाएं। जब दूध फिर से उबलने लगे तो उसमें इलायची पाउडर डालें। पनीर को अच्छी तरह मैश करें और उसे उबलते दूध में डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। धीमी आंच पर पांच मिनट तक पकाएं। मीठेपन की जांच कर लें। अपनी इच्छा के अनुरूप खीर का गाढ़ापन तय करें। गैस ऑफ करें। केसर और पिस्ता डालकर मिलाएं। ठंडा या गर्म सर्व करें।

पाइन एप्पल पेठा कंचे

सामग्री : पेठा-250 ग्राम, चीनी-250 ग्राम, खाने वाला चूना-1 छोटा चम्मच, फिटकरी-आधा छोटा चम्मच, पीला रंग-2-3 बूंद, पाइन एप्पल एसेंस-2 बूंद, बादाम-पिस्ता, चूरा-1 छोटा चम्मच।

विधि : पेठे को छीलकर कड़ा भाग निकाल लें। कटर से उसके गोले काट लें। हर गोले को कटि द्वारा चारों ओर से गोद लें। चूना मिले पानी में उन्हें 10-12 घंटे के लिए भिगो दें। अब साफ पानी से धोकर फिटकरी के पानी में गलने तक पकाएं। बाद में ठंडे पानी से अच्छी तरह धो लें। उसके पश्चात् बराबर के पानी में चीनी मिलाकर पकाएं। पीला रंग और पेठे के गोले भी इसमें डाल दें। एक तार की चाशनी बनने तक पकाएं। पेठा कंचे तैयार हैं। चाशनी से निकालकर ठंडा करें। बादाम-पिस्ता चूरा डालकर सर्व करें।

केसर बादाम-कोकोनट पेड़े

सामग्री : खोया-200 ग्राम, नारियल चूरा-1 बड़ा चम्मच, बादाम चूरा-एक चौथाई कप, कटे बादाम-15-20, पिस्ता चूरा-1 बड़ा चम्मच, चीनी-50 ग्राम, केसर के रेशे-8-10, खाने वाला पीला रंग-2 बूंद।

विधि : केसर के रेशे दूध में भिगोकर मसल लें। खोए को कसकर मंदी आंच पर भून लें। आंच से उतारकर मसले हुए केसर रेशे, नारियल चूरा, पीला रंग, बादाम चूरा और पिसी चीनी मिलाएं। थोड़ा ठंडा होने पर मनचाहे आकार के पेड़े बनाएं। छुरी से दबाकर धारियां बनाएं और कटे बादाम-पिस्ता के चूरे से सजाएं।

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

आप इस माह में कॅरियर सम्बन्धी कोई बड़ा निर्णय ले सकते हैं। कार्य क्षेत्र में कोई विवाद आपको परेशानी में डाल सकता है।आय के नये स्रोत तलाशने होंगे, पारिवारिक जीवन में सम्भल कर चलें, गले एवं चेहरे से जुड़ी कोई समस्याएं भी आपको परेशान कर सकती है।

वृषभ

माह का उत्तरार्द्ध शुभ रहेगा, विदेश यात्रा योग के साथ ही कॅरियर सम्बन्धी क्रियाकलाप लाभकारी रहेंगे, परन्तु खर्च की अधिकता रहेगी। पारिवारिक स्तर पर भी अच्छे परिणाम की उम्मीद है। घुटनों एवं हाथों से सम्बन्धित समस्या से सचेत रहें।

मिथुन

आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा, कॅरियर में सावधानी बरतें। पारिवारिक व वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को परीक्षा में सफलता मिलेगी, बांये पैर एवं हाथ में समस्या हो सकती है।

कर्क

कार्य क्षेत्र में अच्छे परिणाम से आर्थिक पक्ष में सुधार रहेगा, पारिवारिक जीवन में सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए योजना बना सकते हैं, सफल भी रहेंगे।व्यावसायिक यात्रा लाभप्रद रहेगी।

सिंह

माह के पूर्वार्द्ध में सम्भल कर चलें।कारोबारियों के लिए आर्थिक पक्ष अच्छा और पारिवारिक जीवन भी उल्लासपूर्ण रहेगा। विदेश में शिक्षा के आकांक्षी विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम है, लाभ उठाएं। कन्धे एवं कमर से जुड़ी दिक्कतें संभव।

कन्या

पुरुषार्थ एवं परिश्रम पर ध्यान देना होगा, जिन जातकों ने कोई नया कार्य शुरू किया है उनके लिए समय चुनौती भरा रहेगा हालांकि आर्थिक पक्ष में मजबूती आएगी व पारिवारिक जीवन श्रेष्ठ परिणाम वाला सिद्ध होगा। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सचेत रहना होगा, आंख-कान एवं फेफड़े से जुड़ी परेशानी हो सकती है।

तुला

माह का उत्तरार्द्ध सुकूनदायक रहेगा, कॅरियर में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे, नौकरीपेशा जातकों को अच्छा फल प्राप्त हो सकेगा, आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी, माँ की विशेष कृपा प्राप्त होगी।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
2 नवम्बर	कार्तिक कृष्णा द्वितीया	गुरु रामदास जयंती
4 नवम्बर	कार्तिक कृष्णा चतुर्थी	करवा चौथ व्रत
13 नवम्बर	कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी	धन्वन्तरि जयंती(धनतेरस)
14 नवम्बर	कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी	दीपावली-महालक्ष्मी पूजा
15 नवम्बर	कार्तिक कृष्णा अमावस्या	गोवर्धन पूजा
16 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल प्रथमा-द्वितीया	भैया दूज/विश्वकर्मा दिवस
19 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल पंचमी	इंदिरा गांधी जयंती
22 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल अष्टमी	गोपाष्टमी/जैन अठाई प्रारंभ
30 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा	गुरु नानक जयंती

वृश्चिक

कार्य क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक पक्ष सामान्य है। व्यवसाय में कठिनाइयां आएंगी और पारिवारिक जीवन में भी परेशानी होगी।

धनु

माह के पूर्वार्द्ध में बनाई योजनाओं को मूर्त रूप देने के बाद खासी मेहनत करनी पड़ेगी, आर्थिक चुनौतियां मिलेंगी। खर्चों में वृद्धि रहेगी, घर के किसी सदस्य की रुग्णता से परेशानी भी होगी।

मकर

माह का उत्तरार्द्ध सुपरिणाम दायक है। कॅरियर में अच्छी संभावनाएं तलाश पाएंगे। आर्थिक पक्ष सामान्य रहेगा, बचत पर दें, व्यवसाय में प्रगति होगी, मनोविकार सम्भव है।

कुम्भ

विदेश गमन का अवसर प्राप्त हो सकता है। नौकरी एवं कारोबार सामान्य रहेगा। आर्थिक पक्ष उत्तम है। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूलत है। संक्रमित हो सकते हैं, स्थान परिवर्तन के योग भी बनेंगे, खर्च पर लगाम लगाएं।

मीन

कॅरियर के क्षेत्र में परेशानियां सम्भव। आर्थिक पक्ष सामान्य है। विद्यार्थी अपने बौद्धिक कौशल से अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकेंगे।

को-ऑपरेटिव बैंक की वार्षिक आमसभा

उदयपुर। दी उदयपुर अरबन को-ऑपरेटिव बैंक की 47वीं वार्षिक आमसभा 28 सितम्बर को हुई। सीईओ कुतबुद्दीन शेख ने गत आमसभा को कार्रवाई रिपोर्ट पेश की। अध्यक्ष फिदा हुसैन सफी ने कहा कि वर्ष 2019-20 में बैंक की जमाएं 682.77 करोड़ रुपए तथा अग्रिम 329.38 करोड़ रुपए हो गए हैं। पूंजी पर्याप्तता अनुपात 22.36 प्रतिशत रहा है, जो अच्छी वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। कर पूर्व लाभ 129.51 लाख रुपए हुआ है, जो अब तक का सबसे अधिक है। सुरक्षित कोष 95.06 करोड़ है। बैंक को अपना स्वयं का आईएफएस कोड प्राप्त हो गया है, जो सभी शाखाओं में ऑनलाइन फंड ट्रांसफर करने के लिए उपलब्ध है। खारोल कॉलोनी और मधुबन शाखा परिसर में दो एटीएम स्थापितकिए गए हैं। बैंक ने नेट बैंकिंग शुरू करने के लिए संबंधित प्राधिकरण से अनुमोदन प्राप्ति की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

हेवल्स गैलेक्सी शोरूम का शुभारम्भ

चित्तौड़गढ़। रोडवेज बस स्टेण्ड के समीप पिछले दिनों 'हेवल्स गैलेक्सी शोरूम' का शुभारम्भ हुआ। उद्घाटन क्षेत्रीय विधायक चन्द्रभान सिंह आक्या ने किया। मैसर्स जय जिनेन्द्र इलेक्ट्रिकल्स के निदेशक मनीष जैन एवं सीए निलेश जैन ने बताया कि केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह खोर, अरबन बैंक चेयरपर्सन विमला सेठिया, पूर्व प्रधान प्रवीण सिंह राठौड़, एनसीएम सिटी अध्यक्ष डॉ. आई.एम. सेठिया, अरबन बैंक निदेशक रणजीत सिंह नाहर एवं प्रबन्ध निदेशक वन्दना वजीरानी, महावीर इन्टरनेशनल अध्यक्ष राजेन्द्र दोशी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रारम्भ में उत्तम चन्द जैन, शकुन्तला जैन, सीए नीरव दोशी, विनीता जैन एवं रीना जैन ने अतिथियों का अभिनन्दन किया। कम्पनी के मधुर शर्मा राजस्थान प्रभारी एवं नितिन मेहन्दीरत्ता उदयपुर प्रभारी ने बताया कि शोरूम पर टीवी, फ्रिज, पंखों सहित सभी इलेक्ट्रोनिक एवं इलेक्ट्रिकल गुड्स हेवल्स कम्पनी के ही उपलब्ध रहेंगे।

महिला बैंक ने कमाया 1.23 करोड़ का लाभ

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन कॉपरेटिव बैंक की 26वीं आमसभा पिछले दिनों 721 सदस्यों की उपस्थिति में हुई। मुख्य अतिथि बैंक की पूर्व अध्यक्ष डॉ. किरण जैन थीं। बैंक अध्यक्ष विद्याकिरण अग्रवाल ने बताया कि वर्तमान में बैंक की जमाएं 125.27 करोड़ व ऋण 58.89 करोड़ हैं। बैंक ने इस वर्ष 1 करोड़ 23 लाख का लाभ कमाया। इस वर्ष को बड़ी उपलब्धि भीम एवं यूपीआई एप प्रारम्भ करने वाला भारत का यह पहला महिला बैंक बना। मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत ने बताया कि बैंक ने 2019-20 में 184.16 करोड़ का व्यवसाय किया। बैठक में बैंक उपाध्यक्ष सुनिता मांडावत, निदेशक मीनाक्षी श्रीमाली, विमला मूंदड़ा, चन्द्रकला बोल्या, रश्मि पगारिया, सपना चित्तौड़ा, भगवती मेहता, सारिका बोहरा, लता नायक, दिशाश्री भण्डारी उपस्थित थे। संचालन सुदर्शना शर्मा ने किया।

मधुमती विशेषांक का लोकार्पण

उदयपुर। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर की मासिक पत्रिका मधुमती के गांधी विशेषांक का लोकार्पण 1 अक्टूबर को कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने वीसी के जरिए किया। अकादमी सचिव बसन्त सिंह सोलंकी ने बताया कि इस अवसर पर इण्डियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज की अध्यक्ष डॉ. शीला रॉय, पूर्व महाधिवक्ता राजस्थान जी एस बापना, प्रमुख गांधीवादी विचारक प्रो. रामजी सिंह तथा डॉ. एस एन सुब्बाराव ने गांधी दर्शन एवं उनकी प्रासंगिकताएं सिद्धांत पर अपने विचार व्यक्त किए। सचिव सुश्री सुधा सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत तथा धन्यवाद ज्ञापन महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के प्रदेश प्रभारी मनोष कुमार शर्मा ने किया।

सोजतिया ज्वैलर्स का एंटी-कोविड शो-रूम

उदयपुर। कोरोना काल को देखते हुए सोजतिया ज्वैलर्स ने शोरूम को क्लीन डेक्सटर कंपनी की आधुनिक एंटी-कोविड नैनो कोटिंग से सेनिटाइज कराया है। फर्म के निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि ये साइंटिफिक कोटिंग कोरोना और अन्य वायरस के संक्रमण से 90 दिन तक सुरक्षा देती है। इससे ग्राहक बिना किसी डर के शोरूम में आ सकते हैं। क्लीन डेक्सटर के फाउंडर जय बापना ने कहा कि सोजतिया ज्वैलर्स उदयपुर का पहला ऐसा शोरूम है जो पूरी तरह से नैनो कोटेड हो चुका है।

बांटे जागरूकता संदेश के पोस्टर

उदयपुर। लायन्स क्लब, उदयपुर ने शहर में कोरोना से बचाव का संदेश देने वाले पांच हजार पोस्टर वितरित किए किया। विमोचन जिला कलक्टर चेतन देवड़ा ने किया। इस मौके पर क्लब अध्यक्ष गजेन्द्र सोमानी, इकराम कुरैशी व घनश्याम जोशी मौजूद थे।

उदयपुर की 11 परियोजनाओं का शिलान्यास, 6 का लोकार्पण

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 28 सितम्बर को उदयपुर संभाग में 56.16 करोड़ रुपए की 11 परियोजनाओं का शिलान्यास व 5.61 करोड़ की 6 परियोजनाओं का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेन्स के माध्यम से उन्होंने प्रदेश में 133.96 करोड़ रुपए के कुल 68 विकास कार्यों का ई-शिलान्यास एवं ई-लोकार्पण किया। उन्होंने उदयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के तहत 24.42 करोड़ की लागत के 6 कार्यों का शिलान्यास किया। इनमें उदयपुर शहर विधानसभा क्षेत्र में 19.60 करोड़ की लागत के कुम्हारों का भट्ठा में फ्लाई ओवर निर्माण कार्य, 1.49 करोड़ की लागत के गणेश घाटी जोन में हेरिटेज संरक्षण एवं विकास कार्य, 99 लाख की लागत के रेजीडेंसी स्कूल संरक्षा व विकास कार्य, 18 लाख की लागत के चर्च बिल्डिंग में हेरिटेज संरक्षण एवं विकास कार्य तथा उदयपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में 1.30 करोड़ की लागत से सरस्वती पुस्तकालय गुलाबबाग का संरक्षण व विकास कार्य व 86 लाख की लागत के बलीचा में एडमिन ब्लॉक व वेलफेयर सेंटर के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया गया।

इस दौरान नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल, उद्योग मंत्री परसादी लाल मीणा, जिले के प्रभारी मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, शिक्षा राज्यमंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा, विधानसभा में मुख्य सचेतक, डॉ. महेश जोशी सीएम के साथ थे। वीसी के दौरान नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया निगम के मेयर, स्थानीय निकायों के सभापति-अध्यक्ष तथा अन्य जनप्रतिनिधि जुड़े थे।

कृष्णा संस्थान ने बांटी इम्युनिटी पावर दवा

उदयपुर। पिछले सात माह से कोरोना महामारी के दौरान कृष्णा कल्याण संस्थान की ओर से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इम्युनिटी पावर बढ़ाने वाली होम्योपैथी दवा के साथ मास्क एवं बिस्किट के पैकेट निरन्तर वितरित किये जा रहे हैं। संस्थापिका माया बहन ने बताया कि अब तक 60 हजार से अधिक लोगों को ये सेवाएं पहुंचाई गई है। बेटी बचाओ, बेटा-बेटी पढ़ाओ - संस्कार सिखाओ अभियान का संदेश भी दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि उदयपुर जिले के सलूम्बर, नाथद्वारा, मावली झाड़ोल, खेरवाड़ा के साथ ही राजसमन्द एवं डूंगरपुर जिले में भी दवा, मास्क एवं सेनेटाइजर आदि का वितरण किया गया है। इस अभियान में शिवसेना के संभाग प्रमुख हरीश श्रीमाली, अखिल भारतीय क्षेत्रीय महासभा के भानुप्रताप सिंह कृष्णावत, विप्र फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष भूपेश चौबीसा, समाजसेवी कानसिंह, द मिशन ऑफ हैप्पीनेस फाउण्डेशन के संस्थापक हितेश कुमावत, महेन्द्रपाल सिंह, भरत कुमावत, डॉ. ज्योति जोशी, सारिका, मोहन सिंह राजपूत, बाबूलाल श्रीमाली, महेन्द्र सिंह आशिया आदि ने भी सहयोग किया। इस अभियान की पूर्व मंत्री डॉ. मांगीलाल गरासिया व कांग्रेस नेता लालसिंह झाला ने सराहना की।

रोटरी 'शौर्य' ने लिए 28 बच्चे गोद

उदयपुर। रोटरी क्लब शौर्य की ओर से रोटरी इकोनोमिक एवं कम्युनिटी डवलपमेन्ट सेवा कार्य के तहत 28 बच्चे गोद लिए गए। पुनीत गलूण्डिया ने बताया कि क्लब उपाध्यक्ष अंगद छाबड़ा एवं दृष्टि फाउण्डेशन की डायरेक्टर खुशी छाबड़ा ने मावली तहसील के अनाथ आश्रम के 28 बच्चे गोद लिए। इन सभी के खाने-पीने, रहने व पढ़ाई का सारा खर्च खुशी एवं अंगद छाबड़ा की ओर से किया जाएगा। रोटरी मीरा सोएसआर डायरेक्टर डॉ. स्वोटी छाबड़ा ने बताया कि रोटरेक्ट शौर्य की ओर से समय-समय पर आश्रम में और भी सेवा कार्य किए जाएंगे।

लताजी पर सूक्ष्म पुस्तक

उदयपुर। सूक्ष्म डायरी व पुस्तिका निर्माता चन्द्र प्रकाश चित्तौड़ा द्वारा स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर पर तैयार की गई सूक्ष्म पुस्तक का विमोचन पिछले दिनों उनके 91वें जन्मदिन पर अबुंदा कला मंदिर संगीत प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक विवेक अग्रवाल ने किया। कुल 91 पृष्ठ की एक गुणा एक इंच पुस्तिका में लता मंगेशकर के जीवन परिचय को शामिल किया गया है।

कन्या पूजन कर दी 5001 की एफडी

उदयपुर। उम्मेद सेवा संस्थान की ओर से संचालित यशस्विनी आपणी बेटी-गांव री हरियाली योजना के तहत 22 सितम्बर को बेटियों के जन्म को अविस्मरणीय बनाने के लिए पाँच कन्याओं का पूजन कर उनके परिजनों को 5001 रुपये की एफडी, एक पौधा और ट्री गार्ड भेंट किया गया। इस अवसर पर अन्नपूर्णा वाहन का लोकार्पण भी किया गया। संस्थान सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि कुशल बाग तितरड़ी में उद्घाटन के साथ आसपास क्षेत्र में सर्वधर्म समाज में जन्म लेने वाली पांच कन्याओं को 5001 रुपये की एफडी और ट्री गार्ड के साथ एक पौधा दिया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थापक अध्यक्ष भभूत सिंह सिसोदिया ने की, जबकि मुख्य अतिथि आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत एवं विशिष्ट अतिथि गुजराती समाज के सचिव राजेश बी. मेहता थे।

जिलों में जनसुनवाई

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में होने वाली जनसुनवाई अब बंद कर दी गई है। अब सरकार के मंत्री प्रदेश प्रभारी अजय माकन के फार्मूले पर जिलों में जनसुनवाई करेंगे। प्रदेश मुख्यालय में पूर्व पीसीसी चीफ सचिन पायलट के समय जनसुनवाई कार्यक्रम शुरू हुआ था, जो कोरोना के कारण कई महीनों से बंद है। तय फार्मूले के अनुसार मंत्रियों को हर महीने जिलों में जनसुनवाई करके रिपोर्ट कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष और मुख्यमंत्री को देनी होगी। पीसीसी में जनसुनवाई की बजाय जिलों में जनता की सुनवाई से ज्यादा प्रभाव पड़ेगा। लोगों को राहत मिल सकती है। मंत्रियों की सक्रियता का भी रिपोर्ट कार्ड तैयार होगा। नई व्यवस्था में मंत्री जिलों के दौरों में पार्टी कार्यालयों में जाकर पदाधिकारियों से मिलेंगे, जिससे मंत्रियों का पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद कायम होगा। इससे जमीनी स्तर पर सरकार और पार्टी को फीडबैक भी मिलेगा।

राकेश अध्यक्ष, संजय महासचिव

उदयपुर के सुभाष उपाध्यक्ष, कौशल सचिव व राजेश सदस्य

जयपुर। नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट इण्डिया से सम्बद्ध जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) की प्रदेश कार्यकारिणी के 6 अक्टूबर को सम्पन्न निर्विरोध चुनाव में निवर्तमान अध्यक्ष जयपुर के राकेश कुमार शर्मा, संजय सैनी महासचिव तथा कोषाध्यक्ष लेशिष जैन चुने गये। प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर सुभाष शर्मा (उदयपुर), ओम चतुर्वेदी (पाली), दीपक लवाणिया (भरतपुर), कुश मिश्रा (बारां), उपेन्द्र शर्मा (भीलवाड़ा), अनुराग हर्ष (बीकानेर) व अजमेर के विजय मौर्य चुने गये। मुख्य चुनाव अधिकारी एम. फारूख बेग ने बताया कि प्रदेश सचिव पद पर भी सात पत्रकारों का निर्वाचन हुआ। जिनमें उदयपुर के कौशल मूंदड़ा, जयपुर के मुकेश शर्मा, ब्रजेश व्यास व भाग सिंह, दौसा के महेश बालाहेड़ी, अजमेर के संतोष खाचरियावास व टोंक के अजय शर्मा शामिल हैं।

राकेश कुमार शर्मा

संजय सैनी

सुभाष शर्मा

कौशल मूंदड़ा

राजेश वर्मा

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्यों में उदयपुर के राजेश वर्मा, प्रतापगढ़ के चंचल सनाढ्य, डूंगरपुर के प्रवीण कोठारी, पिण्डवाड़ा के साकेत गोयल, बांसवाड़ा के सईद मिर्जा, सिरोही के सुनील आचार्य, भरतपुर के संत कौशिक, करौली के अविनाश पाराशर, दौसा के कमलकिशोर शर्मा, झालावाड़ के दिलीप जैन व अजमेर के विनोद गौतम, पाली के पुखराज कुमावत व जयपुर के चक्रेश जैन, अजय शर्मा, सुधीर शर्मा, शिवराज गुर्जर, मनीष शर्मा, अमित काला, जितेन्द्र शर्मा, अशोक श्रीमाल व महेश शर्मा शामिल हैं।

महासचिव संजय सैनी ने बताया कि संगठन सभी जिलों में वरिष्ठ पत्रकारों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन में पत्रकारों के हितों के लिए सतत् संघर्ष करेगा।

उदयपुर के जिलाध्यक्ष नानालाल आचार्य ने उदयपुर को पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलने पर खुशी व्यक्त की है।

संजीव सह प्रांतपाल नियुक्त

उदयपुर। रोटरी प्रांत राजस्थान, गुजरात व मध्यप्रदेश के पब्लिक इमेज को ऑर्डिनेटर पूर्व प्रांतपाल निर्मल सिंघवी व प्रांतपाल निर्वाचित अशोक मंगल ने रोटरी क्लब उदयपुर हेरिटेज के पूर्व अध्यक्ष संजीव जोधावत को सहायक प्रांतपाल नियुक्त किया है।

सोडाणी को जेएनयू और नीपा में जिम्मेदारी

उदयपुर। गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी को राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने दो बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। उन्हें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली में कार्यकारी परिषद में दो वर्ष के लिए सदस्य मनोनीत किया है, वहीं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली (नीपा) की शैक्षणिक परिषद में तीन वर्ष के लिए सदस्य बनाया है।

प्रो. आईवी त्रिवेदी

त्रिवेदी एवं नागर बने संरक्षक

उदयपुर। राजस्थान नागर ब्राह्मण परिषद का गठन किया गया। संरक्षक प्रो. आईवी त्रिवेदी, निर्मलकांत नागर को, युवा संयोजक, डॉ. सत्यभूषण नागर, मुख्य संरक्षक विनोद शंकर दवे को मनोनीत किया गया।

गुप्ता अध्यक्ष एवं पालीवाल सचिव

वाई. सी. गुप्ता

उदयपुर। माईनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, राजस्थान चेप्टर, उदयपुर की वार्षिक साधारण सभा बैठक में सत्र 2020-22 की नई कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न हुए। अध्यक्ष वाई. सी. गुप्ता एवं सचिव मधुसूदन पालीवाल चुने गये। बैठक में उपाध्यक्ष ओ.पी. सैनी, संयुक्त सचिव डॉ. एस. सी. जैन, कोषाध्यक्ष एम. के. मेहता चुने गये।

मधुसूदन पालीवाल

'जीतो' के डायरेक्टर बने फत्तावत

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय संस्था जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) के राजस्थान जोन के डायरेक्टर पद के चुनाव में राजकुमार फत्तावत विजयी घोषित हुए। कुल 1212 वोट में से फत्तावत ने 839 वोट हासिल किए। 21 से 23 सितम्बर तक ऑनलाइन वोटिंग हुई थी।

प्रो. लोढ़ा का मनोनयन

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय आर्ट्स कॉलेज के पूर्व डीन व राजनीति विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर डॉ. संजय लोढ़ा को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर की संबद्धता पारदर्शिता कमेटी में मनोनीत किया गया है।

राव समाज की कार्यकारिणी गठित

उदयपुर। नवगठित राजस्थान राव समाज संस्थान की प्रथम बैठक में राजस्थान भर के समाज प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में संस्था विधान पारित किया गया। उदयपुर के राव कल्याण सिंह की अध्यक्षता में कार्यकारिणी गठित हुई। जिसमें परामर्शदाता बागसिंह राव मणधर (जालोर), सत्यनारायण राव (जयपुर), विवेक सिंह राव (चित्तौड़गढ़), करण सिंह राव (उदयपुर), भोपाल सिंह राव (उदयपुर), उपाध्यक्ष दिलीप सिंह राव आईडाणा (उदयपुर), डॉ. आजाद सिंह राव (कोटा), महासचिव महेन्द्र सिंह राव कैलाश नगर (सिरोही), संयुक्त सचिव डॉ. भरत सिंह राव (उदयपुर) कोषाध्यक्ष-विनय सिंह राव (चित्तौड़गढ़), मीडिया प्रभारी गुमान सिंह राव (जालोर) संगठन सचिव जितेन्द्र सिंह राजावत (पाली), डॉ. अजित सिंह राव (पाली) महावीर सिंह राव (सीकर) अशोक राव (जयपुर) नरेन्द्र सिंह राव (अजमेर) भूपेन्द्र सिंह (कोटा) हितेन्द्र सिंह (भीलवाड़ा) जयसिंह राव (बांसवाड़ा) भंवर सिंह राव (जालोर) कार्यकारिणी सदस्य अमर सिंह राव, शिव प्रकाश सिंह, राव शैलेन्द्र सिंह, राव रविन्द्र सिंह चुने गए।

राव कल्याण सिंह की अध्यक्षता में कार्यकारिणी गठित।

प्रो. साधना बनी अध्यक्ष

उदयपुर। सुखाड़िया विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में प्रो. साधना कोठारी को नया विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया। रजिस्ट्रार ने इस आशय का आदेश 21 अक्टूबर को जारी किया। प्रो. कोठारी का कार्यकाल 3 वर्ष अथवा सेवानिवृत्ति तक रहेगा।

भाजपा महिला मोर्चा
डॉ. अलका प्रदेश अध्यक्ष बनीं

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की निवर्तमान प्रदेश महामंत्री डॉ. अलका मूंदड़ा को पार्टी ने मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। वे प्रदेश महामंत्री के अलावा प्रदेश मोर्चा में प्रदेश मंत्री, उदयपुर में भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष रहीं।

डॉ. यदु व कनिका बने बॉम मेम्बर

डॉ. यदु गोपाल शर्मा

प्रो. कनिका शर्मा

उदयपुर। राज्य सरकार ने राजकीय महाविद्यालय सराड़ा के प्रिंसिपल डॉ. यदु गोपाल शर्मा व विज्ञान महाविद्यालय उदयपुर की डीन प्रो. कनिका शर्मा को सुविवि में बॉम सदस्य नियुक्त किया है। वे एक वर्ष तक सुविवि की विभिन्न सलेक्शन कमेटियों के मेम्बर भी होंगे।

प्रो. पी. के. सिंह कॉमर्स कॉलेज डीन

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में बैंकिंग एवं व्यवसायिक अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर पी के सिंह ने वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन महाविद्यालय के डीन पद पर कार्यभार संभाला। वे फैकल्टी चेयरमैन भी है।

माण्डोत बने चेयरमैन

उदयपुर। इण्डियन सोसायटी फॉर ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट संस्था उदयपुर चेप्टर की ऑनलाइन वार्षिक साधारण सभा में सर्वसम्मति से अरुण माण्डोत चेयरमैन एवं देवर्षि व्यास सचिव चुने गए। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में वेंकटेश शर्मा उपाध्यक्ष, कपिल शर्मा कोषाध्यक्ष बनाए गए।

आरयूएचएस में गीतांजलि मनोनीत

जयपुर। राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय ने नर्सिंग शिक्षा में क्वालिटी शिक्षा देने, एकैडेमिक कलैंडर एवं सिलेबस तैयार करने के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज(नर्सिंग) का गठन दस सदस्यों को नियुक्त किया है। गीतांजलि शर्मा वैंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग उदयपुर के साथ जयपुर के शशिकांत शर्मा, गिरिराज सोनी, ओम प्रकाश स्वामी, आलोक रावत, हेमन्त त्यागी, महेश विजय, सुनील शर्मा, रामधन गिल्ला व सीकर के महिपाल सिंह शामिल हैं।

सम्मान

डॉ. छतलानी को शोध सम्मान

उदयपुर। ऑस्ट्रेलिया व भारत में कार्यरत अंतरराष्ट्रीय संगठित अनुसंधान संस्थान द्वारा कोविड-19 व लॉकडाउन के प्रभाव पर किए गए उत्कृष्ट शोध के फलस्वरूप राजस्थान विद्यापीठ में कार्यरत डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी को 2020 के प्रख्यात शोधकर्ता का राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया। उन्होंने अपना शोधकार्य विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत के निर्देशन में सम्पन्न किया।

प्रियंका को पीएचडी

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने प्रियंका चौहान को पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। प्रियंका ने अर्थ साइंस फैकल्टी में 'सोपस्टोन इंडस्ट्री इन उदयपुर डिस्ट्रिक्ट एक जियोग्राफिकल विश्लेषण' विषय पर अपना शोध प्रोफेसर डॉ. वीना सनाढ्य के निर्देशन में पूरा किया।

कोरोना वॉरियर्स का सम्मान

जयपुर। पिछले दिनों जयपुर में डॉ. बी. के. मेघवाल चेरिटेबल ट्रस्ट ने समाचार पत्र वितरक कोरोना वॉरियर्स का सम्मान किया। डॉ. मेघवाल ने बताया कि वे अपने सिविल लाइन्स स्थित आवास पर दिसम्बर तक रोगियों को निःशुल्क परामर्श देंगे। उल्लेखनीय है कि डॉ. बी. के. मेघवाल एक जाने-माने चिकित्सक होने के साथ समाजसेवी भी हैं। इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है।

डॉ. भानावत को लोक शिखर सम्मान

उदयपुर। लोक कलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत को वर्ष 2020-21 का लोक शिखर सम्मान कला समय संस्था, भोपाल द्वारा प्रदान किया जाएगा। डॉ. भानावत को लोक साहित्य के प्रति उनकी दीर्घ साधना तथा समर्पित विशिष्ट अवदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया जाएगा।

डॉ. निधि सम्मानित

उदयपुर। साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन ने एमडीएस स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. निधि माहेश्वरी को जिला स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रधानाचार्या के रूप में प्रशस्ति पत्र, ट्रॉफी और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. माहेश्वरी के निर्देशन में बच्चों ने साइंस ओलम्पियाड फाउंडेशन परीक्षा में सर्वोत्तम प्रदर्शन किया। ओलंपियाड में 19 देशों के 1400 से ज्यादा शहरों के 31500 स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। इसमें एमडीएस स्कूल के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

प्रवीण को डॉ. कलाम अवार्ड

उदयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री की ओर से आयोजित डॉ. एपीजी अब्दुल कलाम राष्ट्रीय सम्मान 2020 के तहत उदयपुर से युवा उद्यमी प्रवीण सुथार को व्यावसायिक एवं सामाजिक योगदान के साथ कुपोषण मुक्त भारत अभियान और कुपोषण मुक्त विश्व परिचर्चा में उनके योगदान के लिए राष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

संवेदना

राजसमन्द। उदयपुर जिले के मावली विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक एवं कांग्रेस नेता श्री शिवसिंह जी चौहान(कोटड़ी) का 13 अक्टूबर को स्वर्गवास हो गया। वे 88 वर्ष के थे। वे 1998 से 2003 तक विधायक रहे। अपने पीछे शोकाकुल पुत्र गोपाल सिंह, शंभूसिंह, गणपत सिंह, अभिमन्यु सिंह, हरिसिंह, गोवर्धन सिंह चौहान, पुत्री श्रीमती लीला कंवर सहित पौत्र-पौत्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा सहित अनेक कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं ने शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। कवि, एवं पत्रकार श्री कृष्ण कुमार जी सौरभ भारती(90) का 23 सितम्बर को निधन हो गया। उन्होंने 1956 में जयपुर से दैनिक 'अधिकार' का प्रकाशन आरंभ किया था। 1962 में अपने तीन कवि मित्रों के साथ सीमा क्षेत्रों में जवानों को हौंसला अफजाई के लिए कविता पाठ के जरिए जन जागरण कर प्रधानमंत्री सहायता कोष के लिए धन संग्रहण में योगदान दिया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी, पुत्र ब्रजराज, तारामणि(पत्नी स्व. गिरिराज), नृत्यराज, कलाधर, तिरूपति व पुत्री अन्तिमा का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। प्रमुख उद्यमी (न्यू कनक मेडिकल्स) श्री अनिल जी लुणदिया का 4 अक्टूबर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे 54 वर्ष के थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम देवी पुत्र आशीष, पुत्री आयुषी व भाई-भतीजों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर उद्योग जगत सहित अनेक सामाजिक संगठनों ने गहरा दुःख व्यक्त किया है।

उदयपुर। मीरा गर्ल्स कॉलेज की पूर्व उपाचार्य डॉ. तितली प्रसाद का 21 सितम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त पति डॉ. कामता प्रसाद, पुत्र अमीष प्रसाद, पुत्री डॉ. नम्रता, पौत्र-पौत्री व दोहित्री सहित सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री मोहम्मद अकील शेख का 21 सितम्बर को उनके सेक्टर 9(सवीना) स्थित आवास पर इन्तकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पत्नी श्रीमती आजरा परवीन, पुत्र मो. इरफान शेख, पुत्रियां अंजुम परवीन व आयशा परवीन का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

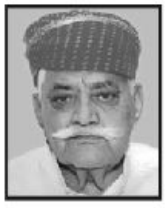

नाथद्वारा। कोठारिया निवासी श्री भवानी सिंह जी राव का 24 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र राव इन्द्रसिंह, राव रतन सिंह, राव देवेन्द्र सिंह, राव पुष्पेन्द्र सिंह, पुत्रियां श्रीमती सुशीला कंवर, भगवती कंवर व रतनराज लक्ष्मी कंवर सहित समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। सूर्या इलेक्ट्रिक एजेन्सी के स्वामी श्री प्यारेलाल जी चपलोत(87) का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र सुरेश, पुत्रियां अरूणा पटवा, रेखा सिंघवी, रीता पोखरना, रानो सकलेचा, संगीता तथा पौत्र-पौत्री व दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनकी जीवन संगिनी का स्वर्गारोहण भी 22 दिन पूर्व 5 सितम्बर को हो गया था।

उदयपुर। प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के संभागीय महासचिव व प्रमुख फल-सब्जी व्यवसायी मोहम्मद छोटू कुरैशी का 24 सितम्बर को इंतकाल हो गया। कुरैशी कुछ दिनों तक निमोनिया पीड़ित होकर अस्पताल में भर्ती रहे। खुशमिजाज, मिलनसार और हमेशा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में सक्रिय रहते थे।

उदयपुर। धर्म परायण श्रीमती ललिता देवी जी पटवा का 18 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति श्री तेजसिंह पटवा, पुत्र भगवतसिंह, होशियार लाल, जगदीश चन्द्र, पुत्रवधू लक्ष्मी, स्व. हिम्मत सिंह, पुत्री कांता देवी व उनका सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री गोविन्दराम जी दरक-माहेश्वरी का 28 सितम्बर को देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोकमग्न पुत्र शांतिलाल, अनुराधा(पत्नी स्व. प्रवीण कुमार), पुत्रियां शकुन्तला लढ्ढा, निर्मला काबरा सहित सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती हिना बंदवाल (तुलसी पैलेस) का 29 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल सासू मां पुष्पा देवी, पति धीरज, पुत्र आदित्य एवं पुत्री श्रुवी सहित पीहर एवं ससुराल पक्ष में समृद्ध परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। बेदला निवासी धर्मपरायण श्रीमती कंचन देवी सेन (पति : स्व. श्री निरंजनलाल जी सेन) का 16 अक्टूबर को आकस्मिक निधन हो गया। कंचन देवी अपने पीछे एक पुत्र भगवती लाल एवं चार पुत्रियां पुष्पा, भाग्यवन्ती, ललिता, मधुबाला सहित पौत्र एवं दोहित्र दोहित्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती भंवरी देवी धर्मपत्नी श्री तुलसीदास जी वैष्णव (राष्ट्रीय मिनरल्स, सोजत) का 12 अक्टूबर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पति, पुत्र छगनलाल व लक्ष्मीकान्त सहित पौत्र-पौत्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती कमला शर्मा (मदन न्यूज पेपर सप्लायर्स) का 22 सितम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति श्री मदन शर्मा, पुत्र नंद किशोर, अखिलेश, विकास, आनंद व सन्तोष शर्मा तथा भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री मदन जी कटारिया का 24 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती सुलोचना देवी, पुत्र मनोज व राकेश, पुत्री हिना का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती मनोरमा जी माण्डोत नाथद्वारा वाला का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने शोकाकुल पुत्र चन्द्रप्रकाश, गजेन्द्र, पुत्र सुलक्षणा सोनी व पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Our Religion is Humanity

एक बार अवश्य पधारें–मान्यवर!

पू. कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन

नि:शुल्क केलिपर्स

नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण

नि:शुल्क फिजियोथेरेपी

नि:शुल्क भोजन

नि:शुल्क कम्प्यूटर हार्डवेयर प्रशिक्षण

नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण

नि:शुल्क मोबाइल रिपेयरिंग प्रशिक्षण

नि:शुल्क इलेक्ट्रीकल प्रशिक्षण

नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण

नि:शुल्क हस्तशिल्प प्रशिक्षण

नि:शुल्क दिव्यांग विवाह

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवाधाम सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002

Tel.+91-294-6622222, Mobile: +919649499999
Web: www.narayanseva.org
E-mail: info@narayanseva.org

अत्याधुनिक एवं विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवाएं पारस जे.के हॉस्पिटल, उदयपुर में

PARAS JK HOSPITAL
Partners In Health

हमारी सुविधाएँ

क्रिटिकल केयर | इमरजेंसी मेडिसन | डायलिसिस | ट्रॉमा | स्पाइन रोग | सामान्य रोग | नाक, कान, एवं गला रोग | नेत्र विज्ञान | त्वचा रोग | छाती रोग | आहार एवं पोषण विज्ञान | मानसिक चिकित्सा | फिज़ियोथेरेपी | दंत रोग

सभी प्रमुख बीमा, टी.पी.ए, कॉरपोरेट एवं पी.एस.यू इलाज के लिए अनुबंधित ।

200 बेडस् | माडॅयूलर ओ.टी | 60 क्रिटिकल केयर बेडस्

24x7 इमर्जेन्सी 0294-6669911

24x7 इमरजेंसी | एम्बुलेन्स सेवाएँ | रेडिओलॉजी | पैथोलोजी | फार्मेसी

हमारा नेटवर्क : गुरुग्राम | पटना | दरभंगा | पंचकुला | रांची | उदयपुर

अपॉइंटमेंट के लिए सम्पर्क करें **0294-6669999, +91 93588 27723**

- हृदय रोग
- मस्तिष्क रोग
- इंटरनल मेडिसिन
- एन्डोक्राइनोलॉजी एवं डायबेटोलोजी
- हड्डी एवं जोड़ सम्बन्धी रोग
- पेट रोग
- किडनी एवं मुत्र सम्बन्धी रोग
- सामान्य एवं लेप्रोस्कोपिक सर्जरी
- प्रसुति एवं स्त्री रोग
- बाल एवं शिशु रोग

पारस जे.के हॉस्पिटल, प्लॉट न. 1, शोभागपुरा, जे.के. लेन, उदयपुर, राजस्थान

+91 294 666 9999 Emergency: 91 294 666 9911 | contact@parashospitals.com, www.parashospitals.com

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोन एवं फैक्स : 0294-2492440
E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

पंडित जनार्दन राय नागर संस्थापक

प्रवेश प्रारम्भ-2020-21

पंडित जनार्दन राय नागर की 109 वीं जयंती

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय : फोन: 0294-2413029, 2410776, मो: 9829160606

•बी.ए.: अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, पर्यावरण विज्ञान,ज्योतिष, संगीत •एम.ए. : अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, संगीत •एम.फिल •डिप्लोमा कोर्सेज : डिप्लोमा इन म्युजिक (सुरमल्हार) •पी.जी. डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग •बैचलर ऑफ जर्नलिस्म एण्ड मास कम्युनिकेशन •सर्टिफिकेट कोर्सेज : स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियन्सी इन इंग्लिश एण्ड कम्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मैथड्स एण्ड डाटा एनालिस्ट, ह्युमन राईट्स, एम.एससी.इन जी.आई.एस.

वाणिज्य संकाय: फोन : 0294-2413029, 2410776, मो: 9460275655

•बी.कॉम. •बी.बी.ए. •एम.कॉम. : लेखांकन, व्यावसायिक प्रशासन •एम.आई.बी. •एम.फिल. •मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट •सर्टिफिकेट कोर्सेज : प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग स्किल्स,टैली ई.आर.पी.9.0, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (GST)

Faculty of Education
B.A. B.Ed/ B.Sc. B. Ed. (Four Year Integrated Course) Mob. 9460693771

फैकल्टी ऑफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंफोरमेशन टेक्नोलॉजी
(फोन : 2494227, 2494217, मोबाइल: 9887285752)

•MCA •M.Sc. (Computer Science) **•PGDCA •BCA**
•PG Diploma In police Science and criminology
(In Directorate of Jan Shikshan and Extension.)

Department of Pharmacy, मो. 9414869044

D. Pharm (Diploma in Pharmacy)

फैकल्टी ऑफ साइंस,फोन : 9461179656, 9461109371

•B.Sc. (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•M.Sc. Mathematics, Physics, Botany and Zoology

ज्योतिष एवं वास्तु संस्थान मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

सायंकालीन महाविद्यालय मो. 9414291078, 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एससी. (मनोविज्ञान)
बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.एड
(आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग,
Master of Disaster Management

Department of Physical Education (Evening) Phone: 9352500445

•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education
•Diploma in Gym Instructor

Physical Education (शारीरिक शिक्षा) मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ, मोबाइल 9414343363, 9928246547

•LL.B. •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

साहित्य संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज) (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग-राजस्थान विद्यापीठ टेक्नोलॉजी कॉलेज
मो.9829009878-9950304204 फोन: 0294-2490210

•Diploma in Engineering - सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग **•Diploma in Engineering (तीन वर्षीय पाठ्यक्रम)**

डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजियोथेरेपी फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी •बेचलर ऑफ फिजियोथैरेपी
•PhD in physiotherapy •Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation •Fellowship in neurological rehabiliatation

उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क - फोन 0294-2491809- 9314696406

•MSW •पी.जी. डिप्लोमा-**HRM •NGO** मैनेजमेन्ट **•Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD)**

डायरेक्ट्रेट ऑफ जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम (फोन : 2490723)

- DCA Diploma in Computer Applications
- **PG Diploma In police Science and criminology**
(In Directorate of Jan Shikshan and Extension.)

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, डबोक

- **B.Sc.** (Hons.) Agriculture (कृषि)

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन

लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डबोक (फोन : 0294-2655327, 2657753)

•M.Phil •M.Ed. •B.Ed. - M.Ed. Integrated.
•B.Ed. •B.Ed. (CD)
•B.A.B. Ed. / B. Sc. B.Ed. Four year integrated Course
•D.El.Ed.

कन्या महाविद्यालय, डबोक (फोन: 0294-2655327,मो. 9460856658, 9694881447)

•B.A.• B.Com.• B.Sc.• M.A. • M.Com • M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics) • M.Com (Accountancy) • Special classes for English Speaking and Computer Basics • M.A in English Literature

आर.वी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, डबोक
(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09351343740, 09414156701)

- बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी **(BHMS)**

फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज (एफ.एम.एस.)
(फोन: 0294-2490632 मो: 9461260408, 9782049628)

- **MBA • MHRM**

Department of Travel, Tourism & Hospitality
Faculty of Management Studies 9950489333

Course Offired	Duration of Course	Eligiblity
BBA (Tourism & Travel)	3 Years	12th Pass in any stream
Specialisation in Hospitality	1 Years	
Diploma in Hotel Management (Food & Bevrage Service)		12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Housekeeping)	1 Years	12th Pass in any stream

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department रजिस्ट्रार

Wishing you a Happy Diwali

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd

www.piindustries.com | info@piindustries.com